हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

11 जुलाई, 1974

खण्ड–2 अंक 4

अधिकृत विवरण

विशय–सूची

सोमवार, 11 जुलाई, 1974

	पृश्ठ संख्या
तारांकित प्र न एवं उत्तर	(4) 1
नियम 45 के अधीन सदन के पटल पर रखे गये तारांकित प्र नो के लिखित उत्तर	(4) 27
गैर सरकारी संकल्प– जिला महेन्द्रगढ के सूखे तथा पिछडे क्षेत्रो में पीने के (मीठे) पानी की नियमित तथा प्र्याप्त सप्लाई के लिए तुरंत आव यक प्रबंध किए जाने के संबंध में	(4) 33
व्यक्तिगत स्पश्टीकरण– चौधरी चांद राम द्वारा	(4) 62

हरियाणा विधान सभा

सोमवार, 11 जुलाई , 1974

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन सैक्टर–1, चण्डीगढ़ में प्रातः 09:30 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरुप सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्र न एवं उत्तर

Fertilizer

***799. Ch. Ram Lal Wadhwa.** Will the Miniser for Agriculture be pleased to state-

(a) the total number of bags of fertilizr received in the State during the period from 1st January, 1973 to date; and

(b) the districtwise number of bags distributed out of those referrd to in part(a) above during the said period?

कृशि मंत्री (चौधरी भजन लाल):

(ए) खाद की 50 किलोग्राम की 65,57,890 बोरियां (1–1–73 से 30–4–74 तक)

(बी) खाद की बोरियों की जिलेवार बांट निम्न प्रकार से है।

जिले का नाम	खाद की बारियों की संख्या
अम्बाला	8,76,210
कुरुक्षेत्र	12,14,200
क्रनाल	13,55,810
श्रोहतक	3,93,420
सेनीपत	3,42,470
जींद	3,06,500
भिवानी	1,92,520
थ्हसार	6,15,920
सिरसा (जो़न)	5,17,630
गुडगांव	5,65,880
महेन्द्रगढ	1,77,330
कुलः	**65,57,890**

चौधरी राम लाल वधवाः क्या मंत्री महोदय बतायेगें कि जितनी खाद आ रह है क्या वह हरियाणा के लिए पर्याप्त है? अगर नही तो उसके लिए सरकार क्या साधन जुटाने जा रही है?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय ऐसा है कि रबी के लिए हमारी स्टेट की जो डिमांड है वह सात लाख टन और खरीफ के लिए हमें चाहिए 4 लाख टन। पिछले साल हमें जो रबी के लिए खाद मिली वह थी साढे तीन लाख टन और खरीफ के लिए मिली वह है डेढ लाख टन। तो हमें खाद हमारी डिमांड के मुताबिक पुरी नही मिलती। खाद पीछे से ही कम आती है इसलिए भारत सरकार हमारी डिमांड से हमें कुछ कम देती है।

श्री औम प्रका ा गर्गः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि कौन–कौन किस्म और कितनी बोरियां जिलावार गई?

चौधरी भजन लालः मांगी गई सूचना इस प्रकार हैः–

जिला	यूरिया	डी0ए0पी0	किसान खाद 26	किसान खाद 25	अमोनियम सल्फेट	सुपर फास्फेट	म्यूरेड आर्फीटा I	कुल
अम्बाला	4,54,550	83,320	29,060	2,36,740	7,660	42,880	22,000	**8,76,210**
कुरुक्षेत्र	8,87,700	1,76,680	2,180	95,760	11,400	24,640	15,840	**12,14,200**
करनाल	8,32,370	1,79,900	8,400	2,36,700	9,340	63,740	25,360	**13,55,810**
रोहतक	1,13,640	6,640	21,000	2,46,500	—	5,640	—	**3,97,420**
सोनीपत	1,64,010	31,140	15,260	1,28,340	—	3,280	440	**3,42,470**
जींद	1,02,040	12,260	22,420	1,65,680	—	3,660	440	**3,06,500**
भिवानी	1,19,380	880	5,440	66,820	—	—	—	**1,92,520**
हिसार	2,64,740	27,160	26,200	2,66,740	—	24,700	6,380	**6,15,920**
सिरसा	3,10,870	48,860	25,480	1,23,620	—	8,800	—	**5,17,630**

गुडगांव	2,44,760	25,400	37,080	2,50,640	—	7,600	400	**5,65,880**
महेन्द्रगढ	58,830	1,800	3,280	1,07,620	—	1,800	—	**1,77,330**
कुलः	**35,52,890**	**5,94,040**	**1,99,800**	**19,25,160**	**28,400**	**1,86,740**	**70,860**	**65,57,890**

चौधरी चांद रामः क्या मंत्री महोदय बतलाने की कृपा करेगें कि हरियाणा में यह खाद की सप्लाई और डिमांड का फर्क है इसको पूरा करने के लिए सरकार क्या कदम उठाने जा रह है। जैसे गांधी जी ने कहा था कि काउ डंग इज् गुड तो खास करके जो गोबर की खाद है उसके लिए क्या कर रहे हैं?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि जि समय गांधी जी ने कहा था तो उस समय इतनी प्रोडक ान भी नही थी। उस वक्त में और आज में बहुत अंतर है। अंतर यहा है कि जो हमारी हाई इल्डिंग वैराईटीज़ है उसमें अगर इस किस्म की खाद न हो तो इतनी पैदावार नही हो सकती। इसके अलावा हम गोबर गैस प्लांट लगाने जा रहे हैं ताकि फर्ीलाइज़र की जितनी डिमांड है उसको पूरा कर सके। इसके अलावा हरी खाद भी बनाने जा रहे हैं और किसानो को खाद के बीज पर सबसिडी भी देते हैं ताकि किसान उससे भी अपनी पैदावार बढा सके।

चौधरी मेहर चंदः क्या मंत्री महोदय बताने का कश्ट करेगें कि खाद की कीमत बढने के बावजूद भी उसकी खपत उतनी ही है जितनी पहले होती रही है तो इसके लिए कोई तजवीज है कि खाद पूरी मिल सके?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, खाद की कीमत बढने के बाद थोडा फर्क जरुर पडा है। पिछले साल जून के महीने

में खाद साढे नौ हजार टन लगी थी और इस साल जून के महीने में करीब छः सवा छः हजार टन लगी है।

चौधरी राम लाल वधवाः क्या मंत्री महोदय बतलाने की कृपा करेगें कि यह जो फर्टीलाईज़र के भाव डबल हो गए हैं तो क्या सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि किसानो को सबसीडाइज्ड रेट्स पर खाद मुहैया की जाए?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, इसके बारे में मैने कल भी बताया था कि सबसीडाइज्ड करने के बारे में सरकार के विचाराधीन कोई प्रोपोजल नही है। अलबत्ता हम यह जरुर करने जा रहे हैं कि जहां आपने खाद के भाव महंगे किए हैं वहां अनाज के भावो पर भी गौर करें ताकि किसान का उसी अनुपात से अनाज का भाव बढाया जाए।

चौधरी दल सिंहः क्या मंत्री महोदय बताएगें कि जैसा कि भारत सरकार की तरफ से हमें एक करोड तीन लाख रुपया मिला है किसानो के इनसैंटिव के लिए, डिमांड में इन्होने कहा था कि एक करोड रुपया सबसीडाइज़ करैगें अब इन्होने कहा है कि सबसीडाइज़ वाली कोई बात ज़ेरे गौर नही है तो मैं जानना चाहता हूं कि आज वाली बात सही है या परसों वाली?

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय,वैसे तो इस सवाल से यह सप्लीमैंटरी अराईज नही होता लेकिन मैं बताना चाहूंगा कि जो रकम सैंट्रल गवर्नमैंट से पिछले साल किसानो को व्हीट के

सिलसिले में बोनस देने के लिए थी उस बात पर विचार हो रहा है कि वह बोनस उनको कै ा के रुप में दिया जाए या सबसिडाईजड फर्ीलाईज़र के तौर पर दिया जाए।

चौधरी धजा रामः क्या एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब बताने की कृपा करेगें कि जो अलहदा–अलहदा को फर्टीलाईज़र एलोकेट किया जाता है उस का क्या क्राईटिरिया है। जहां पर गेहूं या पैडी ज्यादा पैदा होती है उन को ज्यादा दिया जाता है या सब जिलों को बराबर ही दिया जाता है?

चौधरी भजन लालः स्पीकर साहब, खाद की एलोके ान तो इलाके की खपत को ध्यान में रखते हुए की जाती है, जो ज्यादा गेहूं और पैडी ग्रोइंग इलाके हैं उनको ज्यादा दी जाती है।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या गवर्नमैंट के नोटिस में काई इस किस्म की ि ाकायतें आई हैं जिस दिन खाद का भाव बढा उस से एक दिन पहले या एक दिन बाद फर्जी तौर पर खाद बेची हुई दिखा दी गई? अगर यह बात सरकार के नोटिस में है तो इस पर क्या कार्यवाही की गई?

चौधरी भजन लालः क्या सप्लामैंट्री सवाल अराईज़ नही होता क्योंकि यह कोओपरेटिव डिपार्टमैंट का सवाल है, लेकिन सरकार के नोटिस में ऐसी कोई बात नही आई कि जिस दिन भाव बढे हो उस दिन से एक दिन पहले कोई फर्जी सेल दिखाई हो। जिस दिन भाव बढे थे उस दिन माकेटिंग फैड्रे ान के पास 40

हजार टन खाद का स्टॉक था और जिस दिन भाव कम था उस दिन में सिर्फ 1 हजार टन की सेल हुई, तो यह कोई एबनोरमॅल बात नही है। लेकिन फिर भी अगर कहीं पर ऐसा हुआ हो तो आप मेरे नोटिस में लाएं उस की इंक्वायरी करवा ली जाएगी।

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, मैं इस में कुछ ऐडि ान करना चाहूंगा। मुझे कुछ लोगो ने जबानी ऐसी बातें कही हैं कि खाद का जिस तारिख को भाव बढा उस तारीख को इधर उधर हुआ है। तो मैंने स्पीकर साहब उस के लिए इंक्वायरी का आर्डर कर दिया है।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: यह बात वैसे तो पहले भी सरकार के नोटिस में है, मगर मैं वज़ीर साहब से इस के बारे में पूछना चाहता हूं कि कामन पूल का जो फर्टीलाईज़र आता है तो कट्टों में से फट जाने की वजह से ट्रंजिट में वजन कम हो जाता है और सोसाईटियों को कम वजन वाले कट्टे मिलते हैं लेकिन उनको आगे जमींदारो को 50 किलो वजर में पूरा देना पडता है तो फिर जो वजन भाार्टेज होती है वह सोसाईटियों के जिम्मे पड जाती है। तो मैं यह पूछना चाहूंगा कि इस कमी को पूरा करने के लिए सरकार ने क्या इंतजाम किया है?

चौधरी भजन लाल: यह बात ठीक है कि कई जगहो से ि ाकायतें हमें मिली हैं कि जो हमें सैंट्रल पूल से खाद आता है उस में बोरियों का वजन कम हो जाता है। तो हमने यह फैसला

किया है कि किसान को जब हम खाद दें तो पूरा दें। तो इस वजह से इस मार्किटिंग फैड्रे ान को दो करोड का घाटा रहा है खाद का पूरा वजन करके देने में तीन चार साल में।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: स्पीकर साहब मैंने जो सवाल पूछा है उसका जवाब पूरा नही आया।

चौधरी बंसी लाल: स्पीकर साहब, मैं उसमें एडी ान करता हूं, बावजूद इस के कि हम किसान को खाद पूरा तौल कर देते हैं कुछ ि ाकायतें हमारे पार आ जाती हैं और फिर कुछ व्हिसप्रिंग कैम्पेन भी चलता है, सरकार को बदनाम करने की कोि ा ा भी होती है। मैं हाउस को इस बात का वि वास दिलाना चाहता हूं कि हम एग्रीकल्चर मिनिस्टर की चेयरमैनि ाप के नीचे एक कमेटी बना देते है जिस में हमारे भी मैम्बर हो और उनके भी हो और जो वह तरीका रिकमैंड करेगें हम उस को ही लागू कर देगे।

राव अभय सिंह: मिनिस्टर साहब ने अपने जवाब में बताया था कि महेन्द्रगढ जिला को एक लाख 73 हजार कट्टे दै है जबकि और जिलो को पांच लाख कट्टो से भी ज्यादा देते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि हमारा महेन्द्रगढ का जिला जो पहले ही हर बात में बैकवर्ड है वहां पर भी दूसरे जिलो के बराबर खाद का कोटा क्यों नही दिया जाता?

चौधरी भजन लाल: हमने महेन्द्रगढ जिले को एक लाख 73 हजार 330 कट्टे दिए है जबकि वहां पर डिमांड इतनी नही थी और स्पीकर साहब वहां से लोगो की ि ाकायतें यह आई कि खाद हमें जबरदस्ती क्यों दी जाती है, जब लोगो को वहां जरुरत ही नही उतनी ज्यादा खाद की तो फिर राव साहब को खाद की कमी की ि ाकायत नही होनी चाहिए।

चौधरी फूल चंद (मुलाना): क्या मंत्री जी के जवाब के मुताबिक खाद की सप्लाई लोगों की मांग से कम है। क्या सरका कोई ऐसे सटैप्स उठा रही है जिस से कि वह मांग पूरी हो सके और यह भी बताऐं कि हमारा सूबा कब ता फर्टीलाईजर मे सैल्फ सफी ैंट हो जाएगा?

चौधरी भजन लाल: स्पीकर साहब, हमारी हमे ाा पूरी कोि ा ा रही है कि किसान को जरुरत के मुंताबिक खाद दिया जए। इसके लिए भारत सरकार से कई बार कहा है हमारे मुख्य मंत्री साहब ने भी कई बार चिट्ठियां लिखी, जबानी बात की लेकिन भारत सरकार की भी अपनी मजबूरियां है, बाहर से जो खाद आता है वह जितनी मिकदार में आना चाहिए, उतनी मिकदार में नही आता। लेकिन जितना आता है उस में से सब स्टेटस के मुकाबले में भारत सरकार हमारा खास तौर से ध्यान रखती है और हमें ज्यादा से ज्यादा भोयर देती है, लेकिन जो कम आने की वजह से हमें थोडा बहुत कम मिलता है उसके लिए हम कोि ा ा करेगें कि हमें और ज्यादा मिले।

चौधरी बंसी लाल: स्पीकर साहब, मैं आप के जरिए सदन को इन्फरमै ान देता हूं कि जो मैंने पहले ए योरैंस दी थी मैंने वह कमेटी बना दी है उस में चौधरी भजन लाल जी एग्रीकल्चर मिनिस्टर चेयरमैन होगे, सरदार मोहिन्द्र सिंह चट्ठा, चौधरी दल सिंह, राव निहाल सिंह, चौधरी ि ाव राम वर्मा, राव दिलीप सिंह, श्री भयाम लाल, श्री औम प्रका ा गर्ग और भााह हकूमत राय मैम्बर होगें।

चौधरी चांद राम: स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब ने फरमाया था कि व्हीट बोन देने का फैसला करेगें। मैं पूछना चाहता हूं कि वह कब तक किसानों को मिल जाएगा?

चौधरी भजन लाल: स्पीकर साहब, हम इस का बहुत ही जल्दी फैसला करने वाले है।

चौधरी ि ाव राम वर्मा: क्या वजीर साहब बताएगें कि तरावडी मार्केटिंग सोसाईटी से जो हजारो खाद की बोरियां इधर उधर हो गई थी और इसी बिना पर जिस के एडमिनिस्ट्रेटर को भी ट्रांसफर किया गया था, उस के बारे में गवर्नमैंट ने और क्या एक ान लिया है?

चौधरी बंसी लाल: स्पीकर साहब, इस पर भी कमेटी गौर कर लेगी, उस में आप भी भामिल हैं।

श्री औम प्रका ा गर्ग: स्पीकर साहब इन्होने खाद की नई किस्मे बताई हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि उन में से जोन

सी खाद किसान चाहे वह ले सकता है या सारी किस्म की खादें उस को दी जाती हैं?

चौधरी भजन लाल: स्पीकर साहब, ऐसा है कि जो पैडी ऐरिया है खास तौर पर जहां पर पानी ज्यादा है वहां पर तीन किस्म का खाद देते हैं मिलाकर और ऐसा करने से हमारी ईल्ड बढी है। दो तीन सालो से देखा गया है कि हमारी ईल्ड में कमी आई है और इस बारे एग्रीकल्चर युनिवर्सटी से रिसर्च कराई है और उनसे जानकारी हासिल की है कि कमी क्यों हुई है। उन्होने कहा है कि किसान को सोइंग से पहले डी0 ए0 पी0 उालना चाहिए, इससे पैदावार में इजाफा होगा। हम ने ऐसा पिछले साल से भाुरु किया है और इसे सोइंग के टाईम पर देते हैं ताकि किसान बोने से पहले डी0 ए0 पी0 डालें। ऐसा करने से पिछले साल भी ईल्ड में इजाफा हुआ और इस साल भी ऐसा करने जा रहे है।

Fertilizer Plants

***755. Sh. Dhaj Ram:** Will the Minister for Agriculture be pleased to state-

(a) whether any fertilizer plants were installed in the State during the years 1971-72, 1972-73 and 1973-74;and

(b) whether there is any proposal under consideration of the Government to install any new Fertilizer Plant during the year 1974-75 in the State?

Industries Minister (Shri Harpal Singh):

(a) No.

(b) Yes.

Water Supply Scheme of Mangali

***780.Shri Amar Singh:** Will the Minister for Irrigation and power be pleased to state whether it is a fact that the Water Supply Scheme of Mangali is not working properly, if so, the steps taken by the Government so far in the respect?

गृह एवं स्वास्थ राज्य मंत्री (श्रीमती भाारदा रानी): जी नही। पुरानी योजना के अनुसार जल वितरण ठीक प्रकार से काम कर रही है। एक आगमैंटे ान स्कीम तैयार की गई है और इस में वृद्धि करने के लिए सफाई बोर्ड से प्र ाासकिय अनुमोदन प्राप्त कर दिया गया है।

चौधरी दल सिंह: क्या सरकार के नोटिस में यह बात है कि गोसायी खेडा की वॉटर सप्लाई स्कीम प्रापर्ली काम नही कर रही है और अगर ऐसा है तो क्या उसे ठीक करना चाहते हैं?

श्रीमती भाारदा रानी: यह तो मंगाली के बारे में सवाल पूछा गया है।

श्री अमर सिंह: क्या वजीर साहिबा बतायेंगी जैसा कि उन्होने फरमाया है कि योजना सही काम कर रही है तो क्या यह

हकीकत है कि सिर्फ हस्पताल को ही पानी मिल रहा है। और गांव को पानी नही मिल रहा है?

श्रीमती भाारदा रानीः हमाने नोटिस में तो यह है कि सारे गांव को पानी मिल रहा है। 18 स्टैंडिंग पोस्ट्स हैं और सब काम कर रही है।

Government School for Girls

***748.Ch. Shiv Ram Verma.-**Will the Minister for Education be pleased to state-

(a) whether there is any proposal under consideration of the Government to make separat arrangements for imparting education to girls;

(b) if so, the steps taken during the year 1973-74 in this respect together with the number of Primary, Middle and High/Higher Secondary Schools, searately, which are likelyto be converted into Girl Schools during the year 1974-75; and

(c) the total number of Government Primary, Middle and High/Higher Secondary Schools for Girls, separately, in the State at present?

ि ाक्षा एवं परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी):

(क) नही।

(ख) प्र न उत्पन्न नही होता।

(ग)

(1) प्राईमरी	136
(2) मिडल	77
(1) हाई	99
(1) हायर सैकेंडरी	20

चौधरी दल सिंहः क्या मंत्री महोदया बतायेंगी वह लेडी मिनिस्टर होते हुए भी यह महसूस नही करती हैं कि लडकियों के लिए सैपरेट स्कूल होने चाहिए और क्या वजह है कि लडकों और लडकियों के लिए सैपरेट स्कूल नही खोले जा रहे हैं जबकि लोगों की तरफ से इस बात की मांग की जा रही है?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः इसकी दो तीन वजह है। एक तो लडके और लडकियो के लिए अलग अलग स्कूल खोलने से स्टाफ वगैरा पर खर्चा ज्यादा होगा। दूसरे हमारे यहां किसी भी स्कूल में भाहरों और कस्बों को छोड कर इतनी ज्यादा लडकियां भी नही है कि उनके लिए अलग से स्कूल चला सके। वैसे जो एजुके ान स्कूल हैं उन में लेडी स्टाफ रखा जाता है और लेडी टीचर्ज भी वहां पर पढाती हैं।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या यह सही है कि लड़कियां स्कूलों में इसलिए कम जाती हैं क्योंकि लडके लडकियों के लिए इकट्ठे स्कूल हैं और सैपरेट नही है?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः नही ऐसी कोई बात नही है वहां स्कूलों में लेडी टीचर्ज़ भी पढाती हैं और लडकियों को पढाई की पूरी सूविधा दी जाती है।

चौधरी मनफूल सिंहः वजीर साहिबा ने फरमाया है कि लडके लडकियों के लिए अलग अलग स्कूल खोलने से खर्चा ज्यादा बढ जाएगा तो मैं जानना चाहता हूं कि अगर सैपरेट स्कूल खोल दियें जाऐं तो कितना खर्चा बढेगा और कितना खर्चा आएगा?

ि ाक्षा मंत्री (श्री माड सिंह मलिक): 1971.72 में जब सरकार ने नीति बनाई थी स्कूल अपग्रेड करने की तो सरकार ने फैसला लिया था कि आधे स्कूल लडको के और आधे स्कूल लडकियों के अपग्रेड किये जाएगें लेकिन गांव की तरफ से डिमांड लडकियों के स्कूलो ंके बारे नही आई या बहुत कम आई और लडको के स्कूलो के बारे में ही आई कि बनायें जाएं। लड़कियों के स्कूलो के बारे में जितनी डिमांड आई वह सब अपग्रेड कर दिए गए।

श्री धजा रामः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि अगर कोई गांव जिस की आबादी 8/10 हजार की है और उस गांव के लोग लडकियों का स्कूल खोलने के लिए सारी फैसिल्टीज देने को तैयार हो तो क्या वहां लड़कियों का स्कूल चालू करेंगे?

श्री माडू राम मलिकः इस वक्त तेा नही लेकिन जब भी नए स्कूल खोलने की स्कीम बनेगी और लोगों की डिमांड आएगी और अगर लड़कियों की तादाद पूरी होगी और सारा काइटेरिया लोग पूरा करते होगें तो बनाने के लिए तैयार है।

चौधरी मनफूल सिंहः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि क्या इस साल कोई स्कूल अपग्रेंड करने की स्कीम है?

श्री माडू सिंह मलिकः इस साल कोई स्कीम नही है।

राव बंसी सिंहः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि प्राइमरी से मिडल स्कूल बनाने के लिए लडकियों की तादाद और इमारत का क्या काइटेरिया है?

श्री माडू सिंह मलिकः प्राइमरी स्कूल खोलने के लिए कम से कम 40 लडकियां जरुर होनी चाहिए।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या वजीर साहब बतायेंगे जैसा कि उन्होने कहा कि लोगो की तरफ से लडकियों के स्कूल बनाने की कोई डिमांड नही आई तो अगर अब डिमांड आये तो अपग्रेड करेंगे?

श्री माडू सिंह मलिकः जिस वक्त मौका आएगा और ऐसी कोई योजना बनेगी तो उस वक्त देख लेगें।

चौधरी फूल सिंह कटारियाः मेरे साल्हावास हलका में मातनहेल स्कूल में लडकियों की तादाद बहुत ज्यादा है और लोगों

की तरफ से मांग भी है तो क्या वहां पर लडकियों के लिए स्कूल खोलने का इरादा है?

श्री माडू सिंह मलिकः मैंने अर्ज किया है कि नये स्कूल खोलने की अभी कोई स्कीम नही है।

चौधरी जेगिन्दर सिंह भयोराणः क्या वजीर साहब के नोटिस में है कि मेरे हलका में लोहारी में मिडल स्कूल है और लोग उसे अपग्रेड करने के लिए कहते आ रहे हैं, उस बारे में क्या किया जा रहा है?

श्री माडू सिंह मलिकः मेरे इलम में तो यह नही आया है अगर आयेगा तो जब मौका आयेगा तो देख लिया जाएगा।

श्री के0 एन0 गुलाटीः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि जहां जिन स्कूलो में प्योरली लडके ही पढते हैं उन में जहां हैड मिस्ट्रीसिज़ लगी हुई हैं वहां पर जैंटस को हैड मास्टर लगाया जाएगा?

श्री माडू सिंह मलिकः इसमें ऐसी कोई बात नही है हैड मिस्ट्रीस भी लग सकती है और हैड मास्टर भी लग सकता है।

चौधरी ि◌ाव राम वर्माः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि लडकियों के लिए अलग से स्कूल खोलने का कारण यह है कि अब लडकियां ज्यादा पढ गई है या लोग पढाना नही चाहते या कोई और कारण है?

श्री माडू सिंह मलिकः ऐसी कांई बात नही है हम स्कूल खोलना भी चाहते थे लेकिन लोगों ने मांग ही नही की और अगर वे मांग करते तो खोलने की जितने खोल सकते थे कोि ा ा करते।

श्री अमर सिंहः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि खांडा खेडी में लडकियों का अलग मिडल स्कूल है लडकियों की तादाद भी ठीक है और बिल्डिंग भी ठीक है और लोग भी उसे अपग्रेड करने की मांग कर रह है तो क्या उसे अपग्रेड करेगे?

श्री माडू सिंह मलिकः इस साल तो मांग आये या न आये अपग्रेड नही करने हैं।

चौधरी चांद रामः जब हर स्टेट में लाजमी तालीम कानून लागू है तो सरकार इस बारे में इंतजाम कर रही है कि हर स्कूल गोंइग ऐज का लडका और लडकी स्कूल जायें?

श्री माडू सिंह मलिकः इस के लिए दो तरीके हैं। एक तो कानून को लागू करें और लोगों को जेल में भेजें और दूसरा परसुए ान का है। तो हम परसुए ान ही करते हैं और सारी सहुलियतें भी देते हैं, फीस भी आधी कर रखी है और दूसरी सारी सहुलियतें भी हैं।

चौधरी राम प्रसादः हमे लडके लडकियों के लिए अलग अलग स्कूल खोलने जा रहे है। लेकिन क्या यह ठीक है कि आजकल लडके और लडकियां एक साथ पढना चाहते हैं?

श्री जगजीत सिंह टिक्काः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि जहां लडके लडकियां इकट्ठे पढते है और वहां तादाद किसी स्कूल में लडकियां की ज्यादा न हो तो क्या ऐसा कोई फार्मुला बनायेंगे कि वहां पचास फिसदी से ज्यादा लेडी टीचर्ज़ न हों क्योंकि लेडी टीचर्ज़ कंट्रोल नही कर सकती हैं?

(कोई उत्तर नही दिया गया)

चौधरी चांद रामः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि स्कूल गोइंग ऐज के लडके लडकियों की कितनी परसैंटेज है जो स्कूल जा रही है?

श्री माडू सिंह मलिकः इस के लिए नोटिस चाहिए।

लाला रुलिया रामः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि इस बात को देखते हुए कि जितने भी स्कूलो में लेडी टीचर्ज़ लगी हुई है उन से लडके कंट्रोल नही होते हैं इसलिए वहां पर जैंट्स टीचर लगाये जाएगें?

श्री माडू सिंह मलिकः ऐसी बात नही है कि लडको को कन्ट्रोल नही कर सकती, आनरेबल मैम्बर को यह गलतफहमी है।

श्री अमर सिंहः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि इनि ियल स्टेज पर स्कूल गोइंग बच्चों की तादाद में लडके और लडकियों की परसैंटेज क्या है?

श्री माडू सिंह मलिकः अगर हम 1961 से 1971 तक का मुकाबला करे तो लडकियों की स्कूल जाने की परसैंटेज 50 परसैंट बढी है और इसके मुकाबले में लडको की परसैंटेज कम हुई है।

मलिक संतराम दास बतराः कल जो मैट्रिक का रिजल्ट आया है, इसके बारे में क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि लडकियों का रिजल्ट सैटिसफैक्टरी है या लडको का।

श्री माडू सिंह मलिकः यह मिला जुला है।

श्री औम प्रका ा गर्गः स्पीकर साहब, जैसा कि मंत्री महोदय ने बताया है कि स्कूलो में लडकियों की तादाद बढ गई है और लडको की कम हो गई है। क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि लडकियों की पैदाइ ा ज्यादा तो नही हो रही है? (हंसी)

श्री माडू सिंह मलिकः लडकियों को लोग पढाने लग गए है, पहले नही पढाते थें।

Mr. Speaker: There have beensufficient number of supplementaries on this question. Next question please.

Total number of class I, II, III anv IV Government Employees in a State

***802. Ch. Dal Singh:** Will the Minister for Social Welfare and Taxation be pleased to state-

(a) the total number of class I, II, III and IV Government Employees in the State as on 31-3-1974; and

(b) the total number of Class I, II, III and IV Government Employees out of those referred to in part(a) above who belong to Scheduled Castes and Backward Classes, separately?

Mr. Speaker: Extension has been asked for answering this question which has been granted. The communication received by me in this connection is as under:

Shyam Chand, D.O. No. 4660-SW-1-74/14063

मंत्री,

Social Welfare & Taxation विभाग, हरियाणा, चंडीगढ।

Dated 9th July, 1974

Subject:- Starred Assembly Question No. 802, asked by Ch. Dal Singh, M.L.A. regarding total number of Government Employees in the State

My Dear Shri Sarup Singh,

I write to inform you that Starred Vidhan Sabha Question No. 802 to be asked by Chaudhry Dal Singh M. L. A. stands in the name of Social Welfare and Taxation Minister. The question has been fixed for answer on 11-7-1974. The requisite information was called from all departmens in the State, but many Departments have not sent the replies as yet. I shall therefore, feel greatful if this question is fixed for answer on any day during the next assembly session.

Yours Sincerely,

Sd/-Shyam Chand

(Shyam Chand)

Shri. Sarup Singh

Speaker,

Haryana Vidhan Sabha

Chandigarh

चौधरी चांद रामः इस में एक्सटैं ान मांगने की कोई बात नही है। हर डिपार्टमैंट के पास एक रोस्टर होता है जिस में यह इनफर्मे ान मौजूद होती है और यह स्टेट हैड–क्वार्टर अप अवेलेबल हो सकती है।

श्री अध्यक्षः सवाल में सारे इम्पलाईज़ यानी क्लास 1, 2, 3 तथा 4 का नम्बर मांगा है और उस में भोड्यूल्ड कास्टॅस और बैकवर्ड क्लासिज़ के एम्पलाईज़का भी नंबर मांगा है। इस इन्फर्मे ान को कुलैक्ट करने में सर्टेनली कुछ समय चाहिए।

चौधरी चांद रामः हर डिपार्टमैंट ने रोस्टर रजिस्टर मैंटेन किया हुआ है जिस में यह सारी इनफर्मे ान अवेलेबल है और उस में से कुलैक्ट करके दी जा सकती है।

Mr. Speaker: Extension had been asked for in respect of this question which has been granted. Next question please.

Ch.Chand Ram: Till when?

Mr. Speaker: Next question now.

Per Capita Expenditure on Medical Aid

***807. Ch. Mehar Chand:** Will the Minister for industries be pleased to state the maximum point touchd upto May, 1968 and May, 1974, separately, in respect of medical aid in terms of per capita annual expenditure?

गृह तथा स्वास्थयः मंत्री (श्रीमती भाारदा रानी): चिकित्सा सहायता संबंधित अधिकतम प्रति व्यक्ति खर्चा मई, 1968 तक 4 रुपये 77 पैसे था और मई, 1974 तक 12 रुपये 23 पैसे था।

चौधरी मेहर चंदः क्या मंत्री महोदया बताएंगी कि इन्होने जो 12 रुपये 23 पैसे की फिगर दी है, क्या यह मई,1974 की है या इससे पहले की है? अगर इससे पहले की है तो सबसीक्वेंट ईयर की क्या फिगर है?

श्रीमती भाारदा रानीः फिर से कहना मैंने सुना नही।

चौधरी मेहर चंदः मैं दोबरा अर्ज कर दूं। मेरा क्वै चन मंत्री महोदया यह है कि .....

चौधरी बंसी लालः चौधरी साहब, चेयर को ऐड्रेस करें, लेडी मैम्बर को क्यों कर रहे हो? (हंसी)

चौधरी मेहर चंदः मैं यह जानना चाहता हूं कि 12 रु 23 पैसे की जो फिगर मंत्री महोदया ने बताई है क्या यह मई,

1974 के पहले की है? मैंने पूछा था कि "the maximum point thouched upto May,1968 and May,1974, separately in respect of medical aid in terms of per capita annual expenditure?" यह पहले ईयर की भी हो सकती है। पर–कैपिटा एक्सपैंडिचर की फिगर 12 रु 23 पैसे तक पहुंच चुकी है। मैं जानना चाहता हूं कि यह 12 रु 23 पैसे किस साल की फिगर है? अगर यह मई, 1974 से पहले की है तो what is the position in subsequent years?

श्री मती भारदा रानी: यह 1973–74 की पोजी ान है। सब्सीक्वैंट ईयर तो चल रहा है, इस में पोजी ान थोडी कम हो गई है और उसकी फिगर 11.04 रु है।

चौधरी ि ाव राम वर्मा: क्या मंत्री महोदया बातयेंगी, जैसा कि उन्होने कहा है, मई,1968 में 4.77 रु पर–कैपिटा एक्सपैंडीचर है। क्या यह दवाईयों का खर्चा है?

श्री मती भारदा रानी: यह पूरी मैडीकल एड का है।

चौधरी ि ाव राम वर्मा: जैसा कि मंत्री महोदया ने बताया की मई, 1974 में 12.23 रु पर–कैपिटा एक्सपैंडिचर था। इस वक्त के भावों को देखते हुए क्या ये दवाईयां इतने रुपये में आ जाती है या नही?

श्री मती भारदा रानी: मैंने तो पूरी मैडिकल–एड का बताया है जिसमें हास्पिटल डाक्टर वगैरा का खर्च सब कुछ आ जाता है। जो स्वास्थय विभाग का बजट होता है उस में जो पैसा

होता है वह मैडिकल एड पर खर्च होता है और उसमें से जो पैसा दवाईयों के लिए एलोकेट किया जाता है वह दवाईयों पर खर्च होता है।

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, इन्होने मई, 1974 की टोटल पर–कैपिटा एक्सपैंडिचर बताई है 12.23 रु और मई 1968 की 4.77 रु बताई है। आपको मालूम है कि इन आठ सालों में कितनी महंगाई बढी है। तो इस के मुताबिक 1968 के 4. 77 रु और 1974 के 12.23 रु एक जैसे नही बैठते?

चौधरी बंसी लालः यह हिसाब तो आप ही लगा लेना (हंसी)

Loharu Irrigation Scheme

9820. Malik Sat Ram Dass Batra: Will the Minister for irrigation and Power be pleased to state:-

(a) the total area irrigated by the Loharu Lift Irrigation Scheme in the year 1973;

(b) whether the entire project has been completed; if so, the total amount spent on this project upto 31st March, 1974; and

(c) the estimated increase in the annual production of food grain by the use of the water of this project?

State Minister for Irrigation & Power (Sardar Harmohinder singh Chatha):

(a) 25,621 acres.

(b) it is 95% complete.

Expenditure upto 31-3-74 is Rs. 12.41 crores including cost of construction, machinery, that will be transferred to other projects and credit received.

(c) The estimate value of additional foodgrain produced in different years is under:-

1971-Rs. 43 lakhs

1972- Rs. 134 lakhs

1973-Rs. 256 lakhs

मलिक संतराम दास बतराः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि इस स्कीम से कितने गावों को पानी दिया है या कितने गांव इस काबिल हैं जहां पानी लग सकता है?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः यह 94 विलेजिज़ को प्रोजैक्ट है। 5 परसैंट गांव रहते हैं। बाकी सब को पानी लग चुका है।

मलिक संतराम दास बतराः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जमींदार को रबी के सीज़न में कितनी बार पानी देते हैं?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः यह पैरीनियल नहर नही है, फ्लड–वाटर देते हैं और इस दफा हमने सर्दी के मौसम में भी

पानी देने की कोि ा ा की। जितनी देर तक यह देते यह पैरीनियल नही होती, हम फ्लड वाटर ही देंगे।

चौधरी चांद रामः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि यह पानी बरसात के दिनों में ही देते हैं या बरसात न होने पर भी देते हैं?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः हमने पांच सालों में 3 हजार क्यूसिक पानी आगमैंट किया है, बढाया है। एक बात मै मैम्बर साहबा को बता दूं कि किसी एरिये का पानी काट कर नही देते।

चौधरी चांद रामः मैंने यह नही पूछा था मैंने पूछा था कि जैसा कि इन्होने कहा कि फ्लड वाटर देते हैं और फ्लड वाटर रेनी–सीज़न में आता है। क्या आप पानी तब देते हैं जब रेनी सीज़न होता है या रेनी सीज़न के न होने पर भी देते हैं?

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त)ः मैं इस बात को स्पश्ट करना चाहता हूं कि यह ठीक है कि फ्लड रेनी–सीज़न में आता है लेकिन जिस एरिया को पानी देने के लिए यह योजना तैयार की गई है वह ऐरिया ऐसा है जहां रेनी–सीज़न में भी कई बार तीन–तीन चार–चार साल तक एक बूंद नही पडती। मै उस इलाके का भुक्तभोगी हू, वहां का रहने वाला हूं। अम्बाला तथा जगाधरी के इलाकों में बारि ा से दरियाओ में काफी पानी आता है लेकिन लोहारु के इलाक में एक बूंद पानी

की नही बरसती। कम से कम हमने उस बाढ के पानी को कई जो इलाको को तबाह किया करता था, चैनेलाईज़ करके उस इलाके को दिया जहां रेनी–सीज़न में भी एक बूंद तक नही पडती थी।

Multi-Purpose Beas Project

***832. Shri Om Parkash Garg:** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state:-

(a) whether it is a fact that State of Haryana is a partner State in the Multipurpose Beas Project;

(b) if so, the name of those units of which this project is comprised of;

(c) the manner in which the State of Haryana will be benefited by each of the units; and

(d) the time by which these units are likely to be completed?

State Minister for Irrigation & Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha):

(a) Yes.

(b)

(i) Unit No. I (Beas Sutlej Link) and

(i) Unit No. II (Beas Dam)

(c) The benefits from the Project Unit-I and II are availability of water for irrigation, and power.

(d)

(i) Unit No. I (Beas Sutlej Link) : By June, 1976

(i) Unit No. II (Beas Dam) L By June, 1974.

Low and Middle Income Group Housing Scheme

***841.Shrimati Lajja Rani:** Will the Minister for irrigation and Power be pleased to state:-

(a) the total number of houses constructed by the Haryana Housing Board under the Low and Middle Income Group Housing Schemes, separately, upto 31st March, 1974;

(b) the terms and conditions on which these houses were sold to the people; and

(c) the target which is likely to be achieved during the year 1974-75 alongwith the places of their construction?

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त):

(ए) से (सी) विवरण सदन के पटल पर रखा जाता है।

विवरण

(ए) भून्य

(बी) प्र न ही उत्पन्न नही होता।

(सी) वर्श 1974.75 में जो लक्ष्य पूरे करने हैं वह स्थान तथा स्कीम सहित निम्न प्रकार है:

स्थान का नाम	एम0 आई0 जी0	एल0 आई0 जी0	कुल संख्या
फारीदाबाद	164	252	416
पानीपत	51	19	70
सोनीपत	78	16	94
यमुनानगर	25	6	31
अम्बाला फेज़ 1	28	15	43
करनाल फेज़ 1 तथा 2	132	64	196
पंचकुला	51	84	135
पानीपत फेज़ 2	27	13	40
	556	**469**	**1,025**

इस साल लो इन्कम ग्रुप स्कीम के तहत 556 मकान, मिडल इन्कम ग्रुप स्कीम के तहत 469 मकान और टोटल 1025 दोनों स्कीम्ज़ के तहत बनाए जाएंगे।

Ch. Mehar Chand: May I know from the Hon. Minister the steps taken to Provide cheap type of roofed accomodation to the labourers who are working in various Mandis of the State and are without houses?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, हम इस बात के लिए पूरी चेश्टा कर रह हैं कि जो बहुत गरीब आदमी हैं, झुग्गी झोपडी में रहते हैं या बिना मकान के आदमी हैं उनके लिए सस्ते मकान बनवाएं। कई जगह से स्कीम्ज़ मंगवाई है और दो तरह के ऐस्टिमेट्स हमने तैयार करवाए हैं। जो हमारा पीछडा हुआ वर्ग है उसके लिए ई0 डबल्यू0 एस0 टाईप मकान बना दिए हैं। दस हजार रुपये से ऊपर उसकी लागत आती है। बहुत गरीब लोग जो हैं, जो इतनी कीमत भी बर्दा त नही कर सकते और उसकी किस्त भी नही दे सकतें, उनके लिए हमने दो ऐस्टिमेट्स और तैयार करवाए हैं। एक तकरीबन पांच हजार रुपये की कीमत का मकान है और दूसरा साढे तीन हजार रुपये की कीमत का मकान है। इनको बनवाने की योजना बोर्ड के और सरकार के विचाराधीन है। जब यह स्कीम कंप्लीट हो जाएगी तो ऐसे गरीब लोगों के लिए भी मकान तैयार करवाएं जाएंगे।

श्री अमर सिंहः क्या आनरेबल मिनिस्टर साहब बताने की कृपा करेगें कि वर्श 1974–75 में लो इन्कम ग्रुप हाउसिंग स्कीम और मिडल इन्कम ग्रुप हाउसिंग स्कीम के तहत जिन 1025 मकानों के बनाए जाने का जिक्र अभी–अभी महोदय ने किया उनमें भिवानी और हिसार का बिल्कुल ही नाम न होने का क्या कारण है?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, भिवानी और हिसार के अंदर इस वर्श जमीन अक्वायर कर रहें हैं। भिवानी में तो जमीन भी देख ली गई है और वहां रजिस्ट्रे ान का काम भी

भाुरु हो चुका है। हिसार के बारे में अभी नही कह सकता। लेकिन हर डिस्ट्रिक्ट हैडक्वाटर्ज़ पर हाउसिंग बोर्ड की तरफ से कॉलोनी बनाने की तज़बीज है।

राव अभय सिंहः रिवाडी एक बहुत बडा भाहर है। लेबर भी वहां बसती है। क्या मिनिस्टर साहब बताने की कृपा करेंगे कि हाउसिंग बोर्ड ने वहां भी कोई स्कीम तैयार की है?

श्री बनारसी दास गुप्तः अभी तक तो नही की है लेकिन अब स्कीम तैयार कर रहे हैं।

श्री मती लज्जा रानीः क्या दादरी में भी यह स्कीम बनेगी?

श्री बनारसी दास गुप्तः दादरी में भी बनवाएंगे लेकिन अभी तक दादरी के लिए कोई योजना तैयार नही की गई है।

चौधरी राम लाल वधवाः क्या मत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि यह जो कीमत मुकर्रर की जाती है इसका क्या क्राइटेरिया है?

श्री बनारसी दास गुप्तः मकान की कीमत में एक तो मकान बनाने पर जो ऐक्चुअल कीमत आती है वह भाामिल होती है और उसके साथ डिवैल्पमैंट चार्जिज़ भाामिल होते हैं जैसे सीवरेज स्कीम है, गली पक्की करनी है, वाटर सप्लाई स्कीम है, स्ट्रीट

लाईट है। ये तमाम एमेनिटीज़ उस कॉलोनी के अंदर प्रोवाइड की जाती है और इनका खर्च भी मकान की कीमत में डाला जाता है।

श्री बिहारी लाल वाल्मीकिः अध्यक्ष महोदय, हरियाणा के अंदर नगरपालिकाओं और नोटिफाइड कमेटिज़ के अधीन सफाई का काम करने वाले जो कर्मचारी है, पिछडे वर्ग के गरीब लोग हैं, जो गंदगी का पे ाा करते हैं, सुबह उठ कर गंदगी में जाते हैं, गर्मी, सर्दी और बरसात में भी जो गंदी बस्तियों में टूटी झोपडियों में रहते है क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेगें कि उनके लिए भी कोई सस्ते मकान बनाने की स्कीम हैं?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, सफाई मजदूरो के लिए भी सस्ती टाईप के मकान बनाने के लिए हम विचार कर रहे हैं।

चौधरी फूल सिंह कटारियाः स्पीकर साहब, मंत्री महोदय ने अभी बताया कि सफाई मजदूरों के लिए मकान बनाने की योजना पर भी सरकार विचार कर रही है। क्या वे यह बताने की कृपा करेंगे कि जिन गरीब आदमियों के पास मकान बनाने के लिए जमीन भी नही है उनको प्लाट भी प्रोवाइड करने का सरका का कोई विचार है?

श्री बनारसी दास गुप्तः हमारे प्रदे ा में ऐसे जो होमलैस पीपल हैं उनको होम साइट देने का भी सरकार की ओर से विचार किया जा रहा है।

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब, केवल भाहरों में रहने वाले कम आय वालों के लिए और गरीबों के लिए ही यहां बातें बताई जा रही है। क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि गावों में जो कम आमदनी वाले लोग रहते हैं, हरिजन लोग रहते हैं, बैकवर्ड क्लासिज़ के लोग रहते हैं उनको भी आबादी के लिहाज से इसी तरह की प्रैफरैन्स दी जाएगी?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, मैंने पिछली बार भी एक प्र न के उत्तर में, भाायद वर्मा जी ने ही पूरक प्र न किया था, बतलाया था कि इस वक्त ज्यादा गंभीर समस्या मकानों की भाहरों में है। यह ठीक है कि देहात के अंदर भी ऐसे गरीब लोग हैं जिनके पास मकान नही हैं, जमीन नही है। उधर भी हम ध्यान दे रहे हैं और ऐसी स्कीमें बना रहे हैं लेकिन प्राथमिकता भाहरों को इसलिए दे रहे हैं कि वहां आवास की समस्य गंभीर थी।

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, बैकवर्ड क्लासिज़ के लोगो को हरिजन वैलफेयर स्कीम के मातहत मकान बनाने के लिए जो सब्सिडी दी जाती है वह साढे बारह सौ रुपए दी जाती है और उसमें आधा पैसा बैनिफि ारीज़ को खुद लगाना होता है। उनके लिए तो ढाई हजार तीन हजार रुपये का ऐस्टिेट बना दिया गया है। ऐसा क्यों है? क्या मिनिस्टर साहब बताने की कृपा करेंगे कि बैकवर्ड क्लासिज़ वैलफेयर स्कीम के तहत जो रकम दी जाती हे उसको भी इतना ही बढाने की कोि ा ा की जाएगी?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, अभी हाउसिंग बोर्ड तीन प्रकार के टाईप्स के मकान बना रहा है। एक इकनोमिकली वीकर सैक ान के लए, जिसकी कीमत दस हजार रुपये से ऊपर है, एक लो इन्कम ग्रुप के लिए, एक मिडल इन्कम ग्रुप के लिए और अब हम विचार इस बात का कर रहे हैं कि दस हजार रुपया वीकर सैक ान के लिए बहुत ज्यादा है। कम कीमत के सस्ते मकान की हम तजवीज़ कर रहे हैं, उसके लिए जांच करा रहे हैं और ऐस्टिमेट तैयार करा रहे हैं।

श्री अमर सिंहः स्पीकर साहब, आनरेबल मिनिस्टर साहब ने अभी फरमाया कि सफाई कर्मचारियों के लिए और अन्य जो लोग हैं जिनके पास मकान नही है उनको मकान बनाने के लिए योजना विचाराधीन है। क्या वे बताने की कृपा करेंगे कि वह योजना कब भाुरु होगी। कब तक पुरी हो जाएगी और उसको इम्पलीमैंट होने में कितना समय लगेगा?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, बहुत जल्द से जल्द इंप्लीमैंट करने की कोि ा ा की जाएगी।

श्री अध्यक्षः इस प्र न पर काफी सप्लीमैंटरी हो चुकी है, अब हम नैक्सट क्वै चन टेक–अप कर लेते हैं। अभी तक आधे क्वै चन भी नही हुए हैं जबकि टाईम खत्म होने वाला है। चौधरी पोकर राम गोदारा।

तारांकित प्र न 846

यह प्र न पूछा नही गया क्योंकि माननीय सदस्य इस समय सदन में उपस्थित नही थे।

Consumption of Chemical Fertilizer

***852 Sh. Behari Lal Balmiki:** Will the Minister of Agriculture be pleased to state the total consumption of chemical fertilizer in the State during the year 1973-74?

कृशि मंत्री (चौधरी भजन लाल): 5,80,696 टन (साधारण रासायनिक खाद के रुप में)

500 Beds Hospital

***859. Sh. K. N. Gulati:** Will the Minister for Industries be pleased to state:-

(a) whether it is a fact that land has been purchased for the construction of 500 beds Hospital at Faridabad; and

(b) if so, time by which the construction of the Hospital is likely to be started?

गृह एवं स्वास्थ राज्य मंत्री (श्रीमती भारदा रानी):

(ए) नही।

(बी) लागू नही होता।

श्री के0 एन0 गुलाटी: क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी जो फरीदाबाद में सैक्टर 8 में 500 बैड्ज के लिए जमीन ली है?

श्रीमती भारदा रानीः जी अभी नही ली।

श्री के0 एन0 गुलाटीः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी जो फरीदाबाद के 90 प्रति ात सीरियस मरीज होते है वे दिल्ली चले जाते हैं क्या सरका वहां पर कोई बडा हस्पताल खोलेगी ताकि हरियाणा के लोगों का हरियाणा में ही इलाज हो जाए?

श्रीमती भारदा रानीः अध्यक्ष महोदय, इस समय फरीदाबाद के 200 बैड्ज़ का एक अच्छा हस्पताल है। इसके अतिरिक्त क्योंकि वहां पर मजदूर एरिया है एक बहुत अच्छा हस्पताल ई0 एस0 आई0 का भी है। वह 50 बैड्ज़ का है। ई0 एस0 आई0 की वहां पर कई डिस्पैंसयिां हैं लेकिन फिर भी वहां सरकार का ऐसा विचार था कि 500 बैड्ज़ का एक हस्पताल खोला जाए इसके लिए एकाध जगह जमीन भी देखने की कोि ा ा की गई लेकिन इस समय हमारे फायनैं ाल स्ट्रेजैंसी को देखते हुए ऐसा लगता है कि पांच साल प्लान में यह संभव नही हो सकेगा।

श्री के0 एन0 गुलाटीः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि गोल्फ कल्ब की जमीन जो टाउनि ाप में है उसको एक्वायर करके वहां पर हस्पताल खोला जाएगा?

श्रीमती भारदा रानीः अध्यक्ष महोदय, जब पैसा ही नही है तो जमीन खरीदने का सवाल ही पैदा नही होता और वहां

गोल्फ क्लब की जमीन का तो कोई प्र न ही पैदा नही होता है। वह जमीन तो टुरिज़म के कामों के लिए उचित समझी गयी है।

श्री धजा रामः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि जींद का सिविल हस्पताल पिछले सालों से बन रहा है और उसकी बिल्डिंग को, मैं नही समझता क्यों बनाने से रोका है? क्या उसको भीघ्र से भीघ्र बनाने की कृपा करेंगे?

श्रीमती भारदा रानीः अध्यक्ष महोदय, जींदका जो हस्पताल है उसमें कुछ देरी हो गई है क्योंकि पी0 डबल्यू0 डी0 महकमेंके बीच और ठेकेदार के बीच किसी बात पर झगडा हो गया और वह झगडा काफी समय तक कोर्ट में चलता रहा। इसके कारण उसका काम बंद हो गया लेकिन अब उसको जल्दी से जल्दी बनवा रहें हैं।

श्री मलिक संतराम दास बतराः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि बाद ाह खान हस्पताल जो फरीदाबाद में है उसकी एक्स–रे म ाीन खराब है और स्टोर का भी इतना अच्छा इंतजाम नही है और वहां पर जो मैस है वह भी बिल्कुल खराब सा है, क्या वहां का आप निरीक्षण करेंगी?

श्रीमती भारदा रानीः मैं उधर की ही रहने वाली हूं। बाद ाह खां हस्पताल का बहुत बार निरीक्षण किया है। एक्स–रे म ाीन का प्र न पिछले सै ान में भी आया था उस समय मालूम किया था, वहां म ाीन ठीक काम कर रही है।

चौधरी पीर चंदः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी जैसा कि उन्होने और हस्पतालो के मुत्तालिक भी यहां बताया है, मेरे अपने हलके में हसनगढ गांव है जिसके अंदर बिल्डिंग बनी हुई है वहां पर डिसपैंसरी खोलने की कृपा करेंगे?

श्रीमती भाारदा रानीः अव य विचार कर लेंगे।

राव अभय सिंहः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि रिवाडी के हस्पताल को बनते हुए कोई डेढ साल हो गया और अब वहां पर काम बिल्कुल बंद है, इसका क्या कारण है?

श्रीमती भाारदा रानीः डेढ साल नही हुआ है कुछ समय हुआ है लेकिन वहां पर जितने रुपये का एस्टीमैट है उतना पूरा रुपया उपलब्ध नही हो रहा है फिर भी वहां पर काम चालू है। कम से कम 50 परसैंट इससाल में या अगले साल तक बना दिया जाएगा।

श्री गौरी भांकरः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि जो हस्पताल नरवाना में बन रहा है वह कब तक तैयार हो जाएगा?

श्रीमती भाारदा रानीः वह जल्दी से जल्दी तैयार कर देंगे।

श्री बिहारी लाल वाल्मीकिः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि औरंगाबाद में जो हस्पताल टूटा हुआ है,

जिसको करीब छः साल हो गये हैं और एक साल भर से तो ठेकेदार ने वह बिल्डिंग ही खराब कर दी है?

श्रीमती भाारदा रानीः अध्यक्ष महोदय, औरंगाबाद में कोई सिविल हस्पताल नही हैं। वहां पर एक प्राईमरी हैल्थ सैंटर है। इस प्र न का उससे कोई संबंध नही है। लेकिन फिर भी हमें प्राईमरी हैल्थ सैंटर की बिल्डिंग का ध्यान है उसको भी देखेंगे कि उसकी रिपेयर वगैरह की जाए।

श्री अमर सिंहः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि हांसी में हस्पताल की छत गिरी हुई है, उसको कब तक ठीक कर दिया जाएगा?

श्रीमती भाारदा रानीः उसकी रिपेयर के लिए 50–60 हजार रु का प्रबंध किया जा चुका है। यह हमारे नोटिस में है कि हांसी के हस्पताल की बिल्डिंग बहुत खराब है। जैसे ही हमें हस्पताल की बिल्डिंग के लिए कोई पैसा प्राप्त होगा, हांसी और पलवल के हस्पताल को प्राथमिकता दी जाएगी।

श्री जगजीत सिंह टिक्काः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि नारायणगढ में जो हस्पताल बना है वह तकरीबन कम्पलीट हो चुका है, उसको कब तक चालु करने का विचार है?

श्रीमती भाारदा रानीः वह तो बराबर चालू है।

Tubewells

***883 Ch. Ram Parshad:** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state the total number of tubewells which werein working order together with the number of tubewells which were out of order inthe Bawal Constituency during the period from 1st January. 1974 to 30th April 1974 separately?

State Minister for Irrigation & Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha):-

Month	**No. of tubewells in existence**	**Tubewells in working order**	**No. of tubewells out of order**
January,74	19	17	2
February'74	23	20	3
March'74	27	24	3
April,74	27	27	Nil

चौधरी राम प्रसादः क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जो टयूबवैल खराब पडे हैं उन को ठीक करवा कर चालू कर देंगे? क्या वे इसी साल में चालू हो जाएगें?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, ये ज्यो ज्यों टयूबवैल लगा रहे हैं उन को चालू किया जा रहा है। जो थोडी बहुत दिक्कत आती है उसको भी जल्दी दूर करेंगे।

चौधरी फूल चंद (मुलाना): क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि तहसील अम्बाला में जो टयूबवैल लगे है उन में से बहत से आउट आफ आर्डर हैं, कईयों के नंबर साल भर से दिए गए हैं लेकिन वे अब क नही लगे, वे कब तक लगेगें और जो खराब पडे हैं वे कब तक ठीक हो जाएगे?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा: स्पीकर साहब, यह बावल के एरिये का सवाल है, तहसील अम्बाला की बात यह है कि वहां पर टयूबवैल काफी बोर हो चुके है। काफी को चालू किया जा चुका है, मेरी अपनी कांस्टीच्युएंसी में काफी ट्यूबवैल लगे हुए हैं जो अभी तक चालू नही हो सके। इन को जल्दी से जल्दी चालू करने की कोि ा ा की जा रही है।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जो ट्यूबवैल लगाते हैं वह चाहे बावल के एरिया में है चाहे अम्बाला जिले में है, लोगो से एम0 सी0 जी0 लेते हैं। क्या आप एग्रीमैंट में यह कहेंगे कि अगर पानी नही दिया जाएगा.....

Mr. Speaker: I do not allow supplementary to this question. It does not arise out of it.

श्री औम प्रका ा गर्ग: कुरुक्षेत्र में जो डायरैक्ट इरीगे ान के टयूबवैल लगे हैं कितने खराब पडे है और कितने चालू है?

Mr. Speaker: The main question is about Bawal constituency only.

Colleges in Jhajjar Tehsil

***890. Ch. Phul Singh Kataria:** Will the Minister for Education be pleased to state-

(a) the total number of colleges functioning in Tehsil Jhajjar on 31st March, 1974;

(b) whether there is any proposal under consideration of the Govt. to open a new college exclusively for girls in Jhajjar Tehsil; and

(c) the details of the Government Colleges and Private Colleges functioning at present intehsil Jhajjar?

ि ाक्षा एवं परिवहन मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी):

(ए) चार

(बी) नही

(सी) राजकीय और अराजकीय कॉलिजो के बारे में ब्यौरा नीचे दिया गया है:–

1. नेहरु कॉलेज झज्जर

अराजकीय कॉलेज

1. हरियाणा महाविद्यालय बेरी

2. ग्राम भारती महाविद्यालय नाहड

3. इन्द्रा कॉलेज दूबलधन

चौधरी फूल सिंह कटारियाः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि इस तहसील में लडकों के तो कालेज हैं लेकिन लडकियों का कोई कालेज नही। क्या सरकार का लड़कियों का भी कोई कालेज खोलने का विचार है?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः ऐसी कोई विचार नही कि लड़कियों का अलग से कोई कालेज खोला जाए।

चौधरी फूल सिंह कटारियाः क्या मंत्री महोदय यह बताएंगे कि वहां लड़कियों का कालेज खोलने का क्यों विचार नही है, क्या वहां लड़कियां पढना नही चाहती क्योंकि अभी मंत्री महोदया ने बताया है कि वहां लड़कियों का कालिज खोलने का कोई विचार नही है। अगर लोग लड़कियों का कालेज बनाना चाहें तो क्या सरकार उनकी मदद उसके बनाने में करेगी?

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): लडको के कालेज के तीन फाउंडे ान स्टोन रखे गए थे। वे अभी तक नही बने हैं, पहले आप उन को तो बना लो।

श्री के0 एन0 गुलाटीः क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि वल्लभगढ के एरिया और फरीदाबाद के एरिया में इस वक्त आबादी बढ चुकी है लेकिन वहां पर एक कालेज बी0 ए0

तक का है। क्या वहां पर बी0 ए0 बी0 टी0 और एम0 एड0 की क्लासिज़ खोली जाएगी?

ि ाक्षा मंत्री (श्री माडू सिंह मलिक): कालेज फरीदाबाद में चालू है, एम0 एड0 क्लासिज़ तो युनिवर्सटी में है, अगर युनिवर्सिटी ठीक समझेगी तो चालू कर देगी।

श्री के0 एन0 गुलाटी: क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि गवर्नमैंट कालेज फरीदाबाद में आलरेडी इवनिंग क्लासिज़ चालू हैं। क्या वहां पर इवनिंग कालेज में एम0 ए0 क्लासिज़ की इजाजत दी जाएगी?

Mr. Speaker: The question Hour is over now.

नियम 45 के अधीन सदन के पटल पर रखे गए

तारांकित प्र नों के लिखित उत्तर

Hydro-Electric Projects

***872. Ch. Ram Kishan Azad:** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state-

(a) the names of the Hydro-Electric Projects from which the State will get electric power;

(b) the qunatity of the power which the State will receive from each such project; and

(c) the time by which the power is likely to be received from these projects?

Irrigation and Power Minister (Sh. Banarsi Dass Gupta): (a), (b) and (c).

A. Statement containing the requisite information is laid on the table of the House.

Statement

Name of Hydro-Electric Project **(a)**	**Haryana's shae of power.** **(b)**	**Likely yearof Commissioning.** **(c)**
1. Beas Unit-I Stage-I	212 Mega Watt.	1976-77
2. Beas Unit-I Stage-II	105 Mega Watt.	1978-79
3. Beast Unit-II	40 Mega Watt.	1977-78
4. Siul Hydro-Electric Project	55 Mega Watt.	1977-78
5. Salal Hydro-Electric Project.	50 Mega Watt.	1979-80

However, the likely year of commissioning of each project depends upon the timely clearance by Govt. of India, availability of the materials and labour trouble.

Taccavi and Crop Loans

***875. Ch. Brij Lal:** Will the Minister for Agriculture be pleased to state-

(a) the total number of Taccavi and Crop Loans given to the farmers in the years 1967-68, 1968-69, 1969-70, 1970-71, 1970-71, 1971-72, 1972-73 and 1973-74, separately; and

(b) the main conditions on which the crop loans are given to farmers?

Agriculture Minister (Ch. Bhajan Lal): Statement is laid on the table of the House.

Statement showing the Taccavi and Crop Loans given to the farmers by the Agriculture/Revenue/Cooperation Departments.

Year	Fertilizer	Tractor	Minor Irrigation	Horticulture	Soil Conservation (Rs. in lakhs)	Integrated Dry land Agricultural Development Project	Aerial Spray	Act XIX 1883(i) ordinary (b) Other loans (Taccavi loan Rs. in lakhs	Act XII of 1884(i) ordinary (b) other loans	(Crop loan) (Rs.in lakhs)
1967-68	246.32	5.50	115.25	2.09	12.18	-	-	4.74	25.44	911.35
1968-69	246.69	-	13.00	2.63	9.11	-	0.54	3.50	23.51	1287.71
1969-70	198.18	-	3.68	1.31	-	-	3.00	7.95	28.21	1636.47
1970-	568.38	-	12.51	1.07	-	13.80	1.08	3.50	23.77	1585.03

71										
1971-72	-	-	-	1.38	-	0.68	2.50	3.76	44.23	1981.63
1972-73	-	-	-	-	-	-	4.00	3.85	59.11	2249.46
1973-74	-	-	-	-	-	-	23.46	4.02	18.42	2164.10

The total maximum credit limit of a famer member is fixed for Rabi & Kharif Crops on the basis of area to be brought under cultivation multiplied by the scale of Finance prescribed by the Agriculture department which is Rs. 125/-per acre for cash portion. The highest limit for an individual is Rs. 3000 in Barani Areas . Rs. 4000/- in irrigated areas and Rs. 5000/- for sugar cane. Such loans are advanced by the village Coop. Credit Societies on personal surties of 2 members. The rate of interest charged from the ultimate borrower is 10.50%. The loan is repayable within a year.

Statement is laid on the table of the House.

***877. Sh. Prem Sukh Dass:** Will the Minister for Agriculture be pleased to State-

(a) the production of Oil seeds in the state in the year 1968-69, 1969-70, 1970-71, 1972-73 and 1973-74 separately;

(b) the total area of land in the Stae where Oil Seeds were produced in the yers mentioned in part (a) above, separately; and

(c) whethr more area is likely to be brought under cultivation for the production of Oil Seeds during the year 1974-75, if so, the approximate area thereof.

Agriculture Minister (Ch. Bhajan Lal): Statement is laid on the table of the House

Statement

(a) The production of Oil Seeds during various years is given as under:-

Year	**Production ('000 tonnes)**
1968-69	43.0
1969-70	89.0
1970-71	99.0
1971-72	99.0
1972-73	106.4
1973-74	60.

(b)

Year	Area ('000 hectares)
1968-69	84.0
1969-70	135.0
1970-71	142.0
1971-72	176.0
1972-73	221.7
1973-74	223.0

(c) The area under Oil Seeds is likely to increase from 2,30,000 hectares in 1973-74 to 2,40,000 hectares during 1974-75.

Consumption of Fertilizer

***879. Rao Abhai Singh:** Will the Minister for Agriculture be pleased to state-

(a) the total consumption of chemical fertilizer in the State in the years 1968-69. 69-70, 70-71, 71-72, 72-73 and 1973-74, separately;

(b) the total consumption of chemical fertilizer per hectare in the State in the years mentioned in part (a) above, separately; and

(c) whether the Government intends to procure and supply more fertilizer to the farmers at subsidized rates?

Agriculture Minister (Ch. Bhajan Lal):

(a) Statement is laid on the table of the House.

(b) Consumption per hectare is given as under.

Year	**Kgs.**
1968-69	64
1969-70	73
1970-71	99
1971-72	115
1972-73	127
1973-74	157

(c) No.

Statement

Consumption of fertilizers in terms of straight fertilisera (in tonns)

Year	**In terms of ammonium sulphate 20%**	**In terms of Superphasphate 16%**	**In terms of Muriate of Potash 60%**	**Total**
1968-69	201625	34457	1980	**238062**
1969-70	235000	32000	3000	**270000**
1970-71	304860	42880	3710	**351450**
1971-72	352270	39056	4068	**395394**
1972-73	415530	50930	4360	**470820**
1973-74	470300	102956	7440	**580696**

Total	**1979585**	**302279**	**24558**	**2306422**

Per Capita Expenditure on Health/Medicines.

***900. Sh. Hari Singh:** Will the Minister for Industries be pleased to state-

(a) the per capita expenditure for health in the years 1967-68 and 1973-4 in the State, separately;

(b) the per capita expenditure on medicines in the years 1967-68 and 19736-74 in the State separately; and

(c) the approximately total expenditure on the health services in the years 1967-68 and 1973-74 separately?

Industries Minister (Sh. Harpal Singh):

(a)

1967-68	Rs. 4.77
1973-74	Rs. 12.23

(b)

1967-68	Rs. 0.21
1973-74	Rs. 0.82

(c)

1967-68	Rs. 4,21,96,240
1973-74	Rs. 12,86,69,350

Licences for Liquor Shops

***800. Ch. Ram Lal Wadhwa:** Will the Minister for Social Welfare and Taxation be pleased to state the district-wise total number of new licences issued for Indian made foreign liquor and Beer Shops in the State during the year 1973?

Socail Welfare & Excise and Taxation Ministe (Sh. Shyam Chand): A statement is laid on the table of the House.

Statement

Number of Licences issued during the year 1973

Name of the District	**No. of licences for sale of IMFS including beer**	**No. of licences for sale of beer only**	**Total**
Hisar	12	1	**13**
Rohtak	13	-	**13**
Gurgaon	29	2	**31**
Karnal	8	-	**8**
Ambala	9	-	**9**
Mohindergarh	8	1	**9**
Bhiwani	6	1	**7**
Sonepat	4	-	**4**
Jind	1	-	**1**
Kurukshetra	6	1	**7**

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, मेरी एक रिक्वैस्ट है? दो रैजोल्यू ान हैं, इन पर अगर टाईम फिक्स कर दिया जाए तो ठीक रहेगा क्योंकि इससे दोनों ही रैजो़ल्यू ान डिस्कस हो जाएगें।

चौधरी चांद राम: स्पीकर साहब, मेरी एक सबमि ान है कि आप इसको....

Mr. Speaker: You will get the reply.

चौधरी चांद राम: स्पीकर साहब, वह तो मुझे मिल गया है। आपका बहुत–2 ाुक्रिया। मैं थोडी सी सबमि ान करना चाहता हूं। यह मामला किसी पार्टी का नही है.....

Mr. Speaker: It is not in order. I have rejected it.

चौधरी चांद राम: स्पीकर साहब, मैं एक सबमि ान करना चाहता हूं। आपका जवाब तो मुझेमिल गया उसके लिए आपका बहुत बहुत ाुक्रिया। मेरी सबमि ान यह हैकि इसमें आपने जो दो तीन एतराजा़ज दिए है, उनमें एक तो यह है कि यह रीसैंट अकरैंस का नही है.....

Mr. Speaker: When it has been rejected there can be no discussion.

चौधरी चांद राम: हम आपसे दोबारा अपील तो कर सकते है?

Mr. Speaker: You can give another notice.

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, आपने रिजैक्ट तो कर दिया, वह ठीक है। आप मेरी सबमि ान तो सुन लो, सुनने के बाद आप फिर रिजैक्ट कर सकते हैं। यह एक इम्पोर्टैंट मामला है.....

Mr. Speaker: You can come to my chamber and discuss it with me.

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, मेरी रिकवैस्ट यह है कि हमें यह पता नही था कि इसके बारे में ऐडजर्नमैंट मो ान आया हुआ है। हमने भी इसके लिए जो ऐडजर्नमैंट मो ान दिया था वह इसलिए दिया था कि हम चाहते हैं कि अगर गवर्नमैंट इस पर कोई स्टेटमैंट दे दे तो हमारी सैटिसफैक ान हो जाए। हमे ऐडजर्नमैंट मो ान देने का कोई भाौक नही था। हमें इनके ऐडजर्नमैंट मो ान का पता नही था इसलिए हमने भी इसी प्वायंट पर ऐडजर्नमैंट मो ान दिया हैं। मुख्य मंत्री जी यहां बैठे हैं, हम उनसे सिर्फ यह चाहते है कि वे अगर इस बारे में कोई स्टेटमैंट दे दें तो स्पश्टीकरण हो जाएगा और हाउस में यह इन्फर्मे ान आ जाएगी।

श्री अध्यक्षः आपने जो ऐडजर्नमैंट मो ान दिया है That I will examine.

चौधरी राम लाल वधवाः जो डिसीज़न एक पर हो गया, वही इस पर होगा मगर हम तो आपके द्वारा मुख्य मंत्री जी से यह रिक्वैस्ट करना चाहते हैं कि अगर वे कोई स्टेटमैंट दे दें तो हमारी समस्या हल हो जाएगी।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, गुजारि ा यह है कि यह एक बडा इम्पोर्टैंट मामला है और अगर गवर्नमैंट इस पर स्टेटमैंट दे दे

तो पब्लिक के दिलो में भाक नही रहेगा। गवर्नमैंट यह बता दें कि उसकी इस बारे में क्या पोजी ान है?

Mr. Speaker: Order please. I have already decided it. The adjournment motion for which another notice has been received today is under my examination.

Rao Bansi Singh may please move his resolution now.

गैर सरकारी संकल्प

ज़िला महेन्द्रगढ के सूखे तथा पिछडे क्षेत्रो में पानी के (मीठे) पानी की नियमित तथा पर्याप्त सप्लाई के लिए तुरन्त आव यक प्रबंध किए जाने के संबंध में।

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, दोनो ही रेजोल्यू ानस के लिए कोई टाईम फिक्स कर दिया जाए तो अच्छा रहेगा क्योंकि इससे दोनो रैजोल्यू ान डिस्कस हो जाएंगे।

Mr. Speaker: It is for the House to decide. The House can discuss two resolutions or three resolutions or it may discuss one resolution. It is for he House to decide.

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, दोनो रैजोल्यू ान अपोजी ान की तरफ से हैं और अगर ये आपस में टाईम का बंटवारा कर लें तो हमें कोई एतराज नही।

चौधरी राम लाल वधवा: राव सिंह जी, अगर आधा आधा टाईम इन दोनो रैजोल्यू ान पर रख लें तो ठीक रहेगा।

राव बंसी सिंहः जो रैजोल्यू ान मैं ला रहा हूं वह रैजोल्यू ान एक बहुत ही महत्वपूर्ण है। मैं यह चाहूंगा कि मैम्बर्ज इस पर बोले। अगर बाद में टाईम बच जाए तो दूसरा रैजोल्यू ान भी डिस्क्स हो सकता है।

Mr. Speaker: Now the Hon. Member may please move his resolution.

Rao Bansi Singh (Ateli): Sir, I be to move-

That this House recommends to the State Government to make immediare necessary arrangements for the regular adequate supply of drinking water (sweet) in the drought and backward areas of District Mahendergarh.

Mr. Speaker: Motion moved-

That this House recommends to the State Government to make immediare necessary arrangements for the regular adequate supply of drinking water (sweet) in the drought and backward areas of District Mahendergarh.

राव बंसी सिंह(अठेली): अध्यक्ष महोदय, आज जो रैज्योलू ान सदन में लाया गया है, यह स्वीट वॉटर मुहैया करने के बारे में है। मुनश्य मात्र या प्राणी मात्र के लिए मेन तीन जरुरी चीजें है ओर मीठी पानी उनमें सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मैंने इस मीठे पानी के बारे में ही आज सदन के सामने एक रैज्योलू ान रखा है कि जिस इलाके को आज तक मीठा पानी नही मिल सका है, उसे मुहैया करने के लिए प्रबंध किए जाएं। आज तक भी इस इलाके के लोग खारा पानी पीते हैं। अब मैं आपको सबसे पहले इस रैज्योलू ान के बारे में बताउंगा। मैं यह मानता हूं कि आज भी सारे हरियाणा के अंदर

हर डिस्ट्रीक्ट के अंदर बहुत से गांवो में खारा पानी है लेकिन सरकारी आंकडों को देखते हुए मैं आपको यह महसूस कराऊगां कि डिस्ट्रिक्ट महेंन्द्रगढ के अंदर आज की तारीख तक भी सबसे ज्यादा गावों के अंदर खारा पानी है। **(इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई)** डिप्टी स्पीकर साहिबा, अब मैं आपके सामने कुछ फिगर्ज़ रखना चाहता हूं कि हमारी स्टेट के अंदर हर डिस्ट्रिक्ट के कितने गावों में अभी भी खारा पानी है। हमारे इरीगे ान एण्ड पावर मिनिस्टर साहब ने जो आंकडे दिए हैं मैं वही आपके सामने पे ा करना चाहता हूं। उन्होने यह कहा था कि अम्बाला के अंदर 554 गांव है, डिस्ट्रिक्ट भिवानी के अंदर 489 गावं है, डिस्ट्रिक्ट गुडगावं के अंदर 441 गावं है, डिस्ट्रिक्ट हिसार के अंदर 609 गांव है, डिस्ट्रिक्ट जींद के अंदर 276 गांव हैं, करनाल डिस्ट्रिक्ट के अंदर 40 गांव हैं, कुरुक्षेत्र कें अंदर 141 गांव हैं, डिस्ट्रिक्ट सोनीपत में 246 गांव हैं और डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ के अंदर 623 गांव हैं जहां पर कि खारा पानी है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस गिनती के अंदर सिर्फ एक महेंद्रगढ डिस्ट्रिक्ट हि है जिसके गांवो की गिनती दूसरे ज़िलों की निस्बत बहुत ज्यादा है। इस बारे में एक बात यह है कि डिस्ट्रिक्ट हिसार जिसके आंकडे कुछ ज्यादा हैं, उससे डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ बहुत छोटा डिस्ट्रिक्ट है। जो मैंने 623 डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ के गावं बतायें हैं, अगर हम उनमें रहने वाल पोपुले ान का ख्याल करेंगे तो भी हम यह महसूस करेंगे कि पापुले ान के मुताबिक भी जिला महेन्द्रगढ के अंदर सारी स्टेट के मुकाबले में ज्यादा खारा पानी है। इन आंकडो के देखते हुए मैं यह समझता हूं कि इस जिले के इलाके में जहां पर खारा पानी है, मीठा पानी देने के लिए टाप प्रौयरिटी दी जाए, बाकी जिलों की निस्बत इस जिले को टाप प्रौयरिटी दी जाए। उपाध्यक्ष महोदया, मैं

एक बात और अर्ज़ करना चाहता हूं। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि उस जिले को क्यों टाप प्रौयरिटी दी जाने की बात मैं करता हूं? दूसरे जितने भी जिले हैं, डिस्ट्रिक्ट गुडगावं है, रोहतक जिला है, करनाल है, अम्बाला है, मेरे कहने का मतलब यह है कि सारी स्टेट के अंदर लगभग सब जिलों मैं कैनाल का पानी अवेलेबल हैं। इन जिलों के जिन गावों के अंदर खारा पानी है, उन गांवों के नजदीक से नहरें निकाली गयी है और वहां जोहड और तालाब बन गए हैं। उन जोहडो और तालाबों के अंदर या तो नहर का पानी डाला जा रहा है या फिर उसके अंदर कुएं खोद लिए जाते है और या फिर नहर का पानी पीनकके काम में लाया जाता है। जिस इलाके की मैं बात कर रहा हूं, बदकिस्मती से उस इलाकें में आज तक भी कोई नहर नही ले जाई गई। आज तक भी उस इलाके के अंदर पीने के लिए मीठा पानी नही दिया गया। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा सदन से यह अर्ज करुंगा कि डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ भी हमारी हरियाणा स्टेट का ही एक पार्ट है, उसे निगलैक्ट नही किया जाना चाहिए। डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ के इन गावों में जो लोग रहते हैं, वहां पर बारि ा बिल्कुल नही है। वहां पर जोहड तालाबों का पानी बिल्कुल सूख चूका है। मैं आपको यह बात बिल्कुल सच कह रहा हूं कि अगर बिजली का प्रोविजन न हो तो उनके प ा प्यास के कारण मर जाएं। मैं इस सरकार का भाुक्रगुजार हूं कि हरियाणा स्टेट कें अंदर बिजली गई और डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ के भी एक एक गांव में बिजली पहुंची जिससे खारे पानी ही सही, हम प ाुओं को पिला तो सके। डिप्टी स्पीकर साहबा, मैं आपको क्या बताऊं, सारा हाउस इस बात पर हंसेगा यदि इन गावों में किसी के घर मेहमान आ जाता है तो वे उसे दूसरा पानी पिलाते हैं। वहां पर पानी के दो मटके

रखते है। एक में तो खारा पानी और दूसरे में मीठा पानी होता है। जब कोई मेहमान आता है तो वे कह देते है कि बटेंऊ वाला पानी लाकर पिलाओ। जो पानी तीन–चार मील से वे लाते हैं, उसको मेहमानो के लिए इस्तेमाल करते हैं।

आज उन हालात को देखते हुए वहां के लोग यह अंदाजा लगाते है कि जब दे ा स्वतंत्र हो चुका है, गुलामी खत्म हो चुकी है और आज हरियाणा हिंदुस्तान के अंदर सब से अधिक तरक्की कर रहा है, सब से ज्यादा हरियाणा का नाम है तब क्या कारण है कि उनकी तरफ ध्यान नही दिया जा रहा है। क्या वहां के लोग आज भी यह समझें कि विदे ाी हकूमत है और इसलिए उनकी समस्याओं की तरफ ध्यान नही दिया जा रहा है। पिछले तीन–चार साल के अंदर कुछ गांवो की वॉटर सप्लाई स्कीमज़ की तरफ ध्यान दिया लेकिन मै यह कहूंगा जिन इलाको का इस प्रस्ताव में जिक्र है वहां पीने के पानी की हालत बहुत ही खराब है। मैं सदन का ध्यान उन इलाको की तरफ दिलाना चाहता हूं जिनके अंदर खारा पानी है और दूसरी तरफ जहां नहर है और उस इलाके के लिए जो स्कीम है, मैं यह नही कहता की उनको बंद कर दिया जाए, उनको कुछ दिनों के लिए स्लो–डाउन कर दिया जाए, कुछ दिनों के लिए रोक दिया जाए और टाप–प्रोयोरैटी उन इलाको को दी जाए जहां पानी की बहुत अधिक तकलीफ है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, उस इलाके के लोग इस बात को महसूस करते हैं कि इस इलाके के लोगों का यही कसूर है कि जिस समय दे ा गुलाम था, अंग्रेजो का राज्य था, उस इलाके के वीरो ने 1857 की आजादी की लडाई के अंदर लडाई लडी, अंग्रेजो के खिलाफ वे लोग लडे। उस समय जो उस इलाके के बहादुर नौजवान थे वे सब के सब मातृभुमि

की रक्षा करने मे ंकाम आए। आजादी से पहले इस इलाके को उनके साथ जोड दिया जिन्होने 1857 की जंगे–आजादी में अंग्रेजो का साथ दिया था क्योंकि अंग्रेजो को भय था कि अगर इस इलाके के लोगो की इक्नामिक हालत अच्छी हो जाएगी तो यह लोग अंग्रेजो को हकूमत नही करने देंगे। दे ा की आजादी के लिए लडने के कारण ही उनकी तरक्की की तरफ कोई ध्यान नही दिया गया और उन इलाको को बैकवर्ड रखा। आखिर दे ा आजाद हुआ ओर आजादी मिलने पर वहां के निवासियों ने सोचा कि अब हमारी सरकार है भाायद भगवान हमारे लिए अमृत के रुप में बनाकर भेज दें। लेकिन आजादी के बाद भी उन गावों को पानी नही पहूंचा। आप समझ सकते है कि वहां के रहने वाले भी क्या महसूस करते होगे। जब पैप्सू बना तो हमारे इलाके की नुमाइंदगी एक बहुतही सज्जन व्यक्ति करते थे। उन्होने समय समय पर इस इलाके की समस्याओ की ओर सरकार का ध्यान दिलाया लेकिन उस टाईम पैप्सू में हमारा अधिक बहुमत न होने के कारण हमारे साथ सौतेला सलूक किया गया। उसके बाद पंजाब बना और पंजाब के चीफ मिनीस्टर प्रताप सिंह कैरों बने। लेकिन उस वक्त भी हमारी बदकिस्मती रही कि जो इस इलाके को रिप्रेजैंट करते थे उनका प्रताप सिंह कैरों के साथ टकराव था। वे किसी और इलाके में पानी ले जाना चाहते थे और इसी टकराव के कारण इस इलाके को नुकसान उठाना पडा और यह इलाका इग्नोर किया गया। आखिर उसके बाद पंजाब दो भागों में बंट गया और हरियाण बन गया। हरियाणा बनने के बाद कांग्रेस सरकार आई और पंडित भगवत दयाल चीफ मिनिस्टर बने लेकिन उस वक्त भी इस इलाके की तरफ कोई ध्यान नही दिया गया। उसके बाद उस इलाके के रहने वालों का समय आया जो आठ नौ महीने का समय

था और उस इलाके का आदमी स्टेट का चीफ मिनीस्ट बना लेकिन डिप्टी स्पीकर साहिबा, उस टाईम स्थाई गवर्नमैंट न बन पाई और उस इलाके की ओर वह ध्यान नही दे पाई। आज जो सरकार है वह पूरे बहुमत में है, मैजोरिटी में है चाहे जो कानून पास कर सकती है। उस इलाके के लोगों कि सरकार के सामने यह मांग है कि उनको पानी दिया जाए। आज तक उनके पास पीने का पानी नही है जो जिंदगी के लिए सब से जरुरी है। मैं मंत्री महोदय से यह रिकवैस्ट करुंगा कि उस इलाके की तरफ पूरा ध्यान दिया जाए और डिवैलप्ड इलाको में जो दूसरी स्कीमें चल रही हैं उन स्कीमो को स्लो–डाउन करके इस इलाके को टाप–प्रायोरैटी दें। इस इलाके को पीने का पानी मुहैया किया जाए। डिप्टी स्पीकर साहिबा हमारी यह भावना नही है कि दूसरी इलाके की तरक्की को रोका जाए। इस स्टेट के अंदर दूसरे जिले हैं मिसाल के तौर पर रोहतक हैं। पंजाब में चौधरी छोटूराम जो रोहतक के थे, को नुमायंदगी मिली और उनकी नुमायंदगी से रोहतक को बहुत फायदा पहुंचा। उस इलाके में जो नहरो का जाल बिछा है वह उनकी नुमाइंदगी के कारण से ही है ओर उनकी नुमायंदगी से उस इलाके की मदद की। इसी तरह से दूसरे डिस्ट्रीक्ट हैं उनके अंदर भी इसी तरीके से काम हो रहा है। भिवानी के अंदर कोई काम होता है, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुझे कोई दुख नही है कि वहां क्यों काम हो रहा है क्योंकि डिस्ट्रीक्ट भिवानी में जो लोहारु और तो ाम का इलाका है वह सारा इलाका हमारे जैसा ही है। वह हमारे पडोस में है। उनकी हालत हमारे से भी बुरी थी। इसलिए हमें कोई दुख नही है। कि वहां पानी क्यों पहुंचा है? हम तो जो हमारा हक है मंत्री महोदय से उसकी डिमांड करते हैं। इस रेजोल्यू ान को मद्देनजर रखते हुए इस साल यानी

1974–75 में डिवैल्पड एरियाज़के लिए वॉटर सप्लाई कीजो स्कीमें चल रही है उनको स्लो डाउन करके ज्यादा फंड्ज उन इलाको को दिएं जाएं जहां खारा पानी है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह इलाका हमे ाा` अपनी मातृभुमि की रक्षा के लिए अपने नौजवानो की कुर्बानी देता रहा है। चीन की जब लडाई हुई, आप इतिहास उठाकर देख लें सब से ज्यादा कुर्बानी इस इलाके के लोगों ने की। इसके बाद पाकिस्तान से दो लडाईयों हुई, इन दोनों लडाईयों में भी इसी इलाके के लोगो कि अधिक कुर्बानी है। पाकिस्तान के साथ जो दूसरी लडाई हुई उसमें हमारे यहां के एक नौजवान जिसका नाम बबरु बान था, जो कि नेवी में था, उसने अपनी बहादुरी से एक मिसाल कायम कर दी। उसने पाकिस्तान के जहाज़ के अंदर घुसकर उसको नश्ट भ्रश्ट कर दिया और इसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तान की फतेह हुई। जिस सूखे इलाके के नौजवान इतने बहादूर हो और जिन्होने दे ा के लिए इतनी कुर्बानी की हो क्या आज उनको इतना भी हक नही कि वे पीने के पानी की डिमांड कर सकें? इसलिए मैं आपके थ्रू मंत्री महोदय से प्रार्थना करुंगा कि इस रैजोल्यू ान को यूनानी मसली सारा हाउस पार करे और ड्राट अफैक्टिड एरियाज़ के लिएपानी की जो स्कीमज़ है और 1 करोड 44 लाख रुपया जो सैंटर की तरफ से ऐलोकैट हुआ है उसमें सब से ज्यादा हम इस इलाके को मिलना चाहिए क्योंकि इनका सब से ज्यादा हम बनता है। इतना ही कहकर मैं समाप्त करता हूं।

चौधरी फूल सिंह कटारिया (साल्हावास–अनुसूचित जाति): उपाध्यक्ष महोदया, आज जो रैजोल्यू ान राव बंसी सिंह जी ने रखा है मैं इसकी पूरजोर हिमायत करता हूं। हिमायत मैं इसलिए करता हूं कि ये भी उसी इलाके से ताल्लुक रखते हैं जिससे मैं ताल्लुक रखता हूं

लेकिन इन्होने थोडी सी यह भूल कर दी इन्होने इस रेजोल्यू ान में झज्जर और नाहड तहसीलो के नाम नही दिए। इन्होने कहा कि हमारा महेन्द्रगढ का जिला एक बहादूरों का जिला है लेकिन मैं हाउस को यकीन के साथ बताना चाहता हूं कि झज्जर तहसील ऐसी बहादूर तहसील है कि उसके मुकाबले में कोई तहसील या जिला इतना बहादूर नही है। झज्जर तहसील में सब से ज्यादा फौजी हैं। मैं आपको बता दूं कि सारे हरियाणा में पचास हजार फौजी हैं जिनमें से दस हजार इस हलके के फौजी हैं। मेरे हलके में एक कोसली गावं है वहां अभी भी तीन–चार लाख रुपया महीना पैं ान आता है फौजियों को। मेरे हलके में आप जा कर देखें कि एक एक घर में तीन तीन चार चार कैप्टन और मेजर मिलेगें। मैं यह नही कहता कि राव बंसी सिंह ने ठीक नही कहा लेकिन मैं तो यह बताना चाहता हूं कि इसमें झज्जर तहसील का नाम भी आना चाहिए। झज्जर तहसील ने बहुत बहादूरी के काम किए हैं। 1857 में यहां का नवाब फांसी लगा जो कि काबिले तारीफ है। यह इलाका भी तो इनके साथ ही है। अंग्रेजो ने अपने वक्त में इन इलाको की तरफ बिल्कुल ध्यान नही दिया था इसलिए मैं आपसे यह अर्ज करुंगा कि जो नाहड तहसील का इलाका है उस जगह पर पानी कडवा है उसकी तरफ भी ध्यान दिया जाए। रोहतक जिले में 431 गावं ऐसे हैं जहां का पानी खारा है लेकिन झज्जर तहसील के कुछ गांव तो एसे है जहां पानी की चाय भी नही बनाई जा सकती। वहां पर लोग हर साल कच्चे कुएं खोदते है। उनको पानी की इतनी तकलीफ है कि भाायद ही हरियाणा में इतनी तकलीफ कहीं और हो। डिप्टी स्पीकर साहिबा आपने भाायद वह इलाका देखा नही होगा, अगर आप उस इलाके को एक बार देखें तो आपको पता चल जाएगा कि वहां के लोगो की क्या हालत है।

मंत्री और मुख्य मंत्री महोदया का मै म ाकूर हूं कि उन्होने तीन स्कीमें बना रखी है। जिनमें से एक स्कीम "C" पर काम चल रहा है। यह स्कीम 1967 से चली थी। एक स्कीम के तहत 15–16 गावों मे ंपानी पहुंचता है लेकिन वहां के लोगों ने मिल कर एप्रोच करी कि इस स्कीम को चले 5–6 साल हो गए हैं लेकिन फिर भी हमें पूरा पानी नही मिल रहा है और न ही बाकी की दो स्कीमों का अभी काम पूरा हुआ है। मैं यह नही कहता कि पब्लिक हैल्थ वाले काबिल नही हैं, वे बडे अच्छे काबिल अफसर हैं, वहां पर आते हैं लोगों की तकलीफो को सुनते हैं, मैं उनकी पूरी तारीफ करा हूं लेकिन वे कहते हैं कि हमारी मजबूरी हैवह हमारे पास फंड्ज की कमी है। जब गवर्नमैंट नेयह तय किया है कि वह सब से पहले पीने के पानी की तरफ तवज्जोह देगी तो गवर्नमैंट से अर्ज करुंगा कि उसे सबसे पहले उन इलाको की तरफ तवज्जो देनी चाहिए जहां पानी नही है। जैसे कि झज्जर तहसील और नाहड सब–तहसील के इलाके हैं। गवर्नमैंट ने यह जो स्कीम बनाई है इसमें गावं वालो को भी कुछ हिस्सा देना होता है तो मेरे इलाके में कुछ गांव ऐसे है जो बहुत ही ज्यादा गरीब हैं और वे यह हिस्सा नही दे सकते। तो मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करुंगा कि ऐसे इलाके जिनका पानी खराब है ओर जो गरीब है वहां पर पीने का पानी का बिना पैसे लिए जल्दी इंतजाम किया जाए। 5–7 गांव तो ऐसे हैं कि जहां स्कीम बिल्कुल तैयार पडी है लेकिन पैसे न होने की वजह से वही रुकी पडी है। जिन इलाको में पानी बहुत ज्यादा खराब है जहां के पानी से चाय भी नही बन सकती वहां पर किसी का कोई रि तेदार तक नही जाता क्योंकि वह जानता है कि वहां पर जाकर तकलीफ उठानी पडेगी। इसलिए सरकार से मेरी फिर प्रार्थना है कि जिन

इलाको में पानी खराब है उनके लिए जल्द से जल्द इंतजाम किया जाना चाहिए। **(इस समय सभापतियो की सूची में से एक सदस्य चौधरी मनफूल सिंह पदासीन हुए)** चेयरमैन साहब, आप कुर्सी पर विराजमान है और आप भी उसी हलके से ताल्लुक रखते हैं जिसके बारे में मैं जिक्र कर रहा था। आपको तो भली भांती पता है कि उस इलाके का क्या हाल है। चुंकि अब आप कुर्सी पर विराजमान है इसलिए मैं आपसे और भी उम्मीद रखता हूं कि आप इस तरफ और भी गौर करवाएंगे। जिन गावों की स्कीम बन चुकी है उनमें कुछ गावं है जैसे कोका, कुलाना और डाकना भायद इनके पैसे जमा हो गए हैं जो ढाकना गांव है वहां के सेठ ने पैसे जमा करवा दिये हैं। मैं आपसे निवेदन करुंगा कि जिन गांवो ने अपने हिस्से के पैसे जमा करवा दिये हैं उन पर तो जल्द से जल्द काम भुरु करवा दिया जाए। इसके अलावा मैं साल्हावास के हलके की बात करता हूं इसमें भी कई गांव है जैसे खानपुर, बहाला और नया गांव। तो ये गांव ऐसे हैं जिनका पानी बिल्कुल खराब है। इनके बारे में मैं कई बार अर्ज कर चुका हूं कि ये गांव पानी न होने की वजह से इतने तंग है कि कुछ कहने से बाहर हैं। चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से निवेदन करुंगा कि जो गांव स्कीम में भामिल हैं उनमें वह जल्द से जल्द पानी पहुंचाने की कृपा करें। और चेयरमैन साहब, कई गांव मेरे हलके में ऐसे हैं जहां स्कीम चली हुई है लेकिन वहां पानी नही है जैसे वहां एक धरोड गांव है उसमें दो साल से पानी की स्कीम चली हुई है लेकिन पिछले दो महीनो से वहां से लोगों की ि ाकायत है कि वहां पानी बिल्कुल नही आ रहा है। चेयरमैन साहब, इसके अलावा एक बात और है कि जहां भी हरिजनो के मुहल्ले हैं वहां पानी के नल्के नही लगे हुए हैं और गवर्नमैंट की

तरफ से यह कहा जाता है कि जहां हरिजनो के मुहल्ले हो वहां नल्के जरुर लगाए जाए। मैं अपने इलाके की ही नही कहता सभी के लिए कह रहा हूं। जैसे खरखौदा एक बहुत बडा गांव है (11:30 बजे)वहां हरिजनो के मुहल्ले मे पानी के नलके नही है। मैं नाहड की बाबत भी कहता हूं कि वहां अब पानी तो आ गया है लेकिन हरिजनो के महल्लो में नल नही लगाए गए। स्पीकर साहब ये आदमी हमे ाा कांग्रेस का साथ देते है लेकिन चूंकि वे गरीब हैं इनकी तरफ बिल्कुल ध्यान नही दिया जाता लेकिन इन के मुकाबले में जो बडे बडे अमीर आदमी होते हैं वे फायदा उठा जाते हैं। इसलिए मैं अपनी सरकार से निवेदन करुंगा कि जहां जहां पानी नही है उन गावों में पीने का पानी दिया जाए और जिन गावों में पानी दे दिया गया है वहां पर हरिजनो के मुहल्ले में नलके जरुर लगवाये जाएं ताकि उनको पानी की आसानी के साथ सुविधा प्राप्त हो सके। बस मैं आप के द्वारा इतना ही निवेदन करना चाहता था और मुझे आ ाा है कि हमारी सरकार इन बातों को ध्यान में रख कर सारा प्रबंध करेगी।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी): चेयरमैन साहब, मैं ज्यादा वक्त नही लूंगा सिर्फ मिनिस्टर महोदय की तवज्जो इस बात की तरफ दिलाऊगां कि कर्नल महा सिंह जी दो गांव में गए थे खेडी और खातीबास और वह अपने वक्तो की चेयरमैन साहब एक स्कीम थी जिस को वह जिन्दा कर आए थे और उन्होने वायदा किया था कि वहां पानी का जल्दी इंतजाम हो जाएगा। इस बात को आज सवा दो साल हो गया है। मैं यह चाहता हूं कि और किसी का वायदा तो बे ाक कच्चा हो जाए लेकिन कर्नल महा सिंह का फौजी वायदा कैसे कच्चा हो जाए तो वह वायदा पुरा होना चाहिए। इस के अलावा चेयरमैन साहब गूढा

और घौर दो गांव हैं उन दोनो गावों का पानी भी उतना ही खराब है जितना कि खेडी और खातीबास का है और वह दोनो गांव कंट्रीब्यूट करने के लिए भी तैयार हैं। इसलिए इसी स्कीम का पार्ट अगर गूढा और घौर को भी बना लिया जाए तो इन चारों गांवो को एक ही जगह पानी मिल सकता है। मैं सिर्फ यह अर्ज करना चाहता हूं कि गूढा और घौर इन दो गावों को भी स्कीम में भाामिल कर लिया जाए। अगर इतना ही हो जाए मेरे हलके में तो बहुत है। बस मैं इतना ही अर्ज करना चाहता था।

श्री गुलाब सिंह जैन (हिसार): चेयरमैन साहब, सदन के सामने एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रस्ताव श्री बंसी सिंह और राव दलीप सिंह जी लाए है। इस के लिए उनको मुबारिकबाद देता हूं। इस रैजोल्यू ान में यदि वे महेन्द्रगढ के साथ साथ हिसार जिला का भी नाम जोड देते तो ज्यादा अच्छा होता क्योंकि राव बंसी सिंह जी ने आंकडे देते वक्त बतायाकि हिसार जिला में सब से ज्यादा बैकि ा वाटर है। तो यह स्पीकर साहब आज की बात नही है ब्रिटि ा गवर्नमैंट के राज्य में जो कि यह क्लेम करते थे कि हम हिन्दोस्तान को बहुत आगे ले जा रहे हैं उस वक्त भी हमारे यहां पीने के पानी की गंभीर समस्या थी। मेरे जिला में ऐसे इलाके थे जहां पर पानी के पानी को रा ान होता था। चेयरमैन साहब, अडलट्रे ान आपने दूध की, घी की या दूसरी खाने की चीजों की तो सुनी होगी लेकिन मेरे जिले में पीने के पानी की अडलट्रे ान होती थी। भाखडा की नहर आने के बाद वहां कुछ राहत मिली है वर्ना पहले जब हम रेल गाडी पर सफर करते थे, जिस स्टे ान पर गाडी रुक जाती थी लोग सैंकडो की तादात में मटके लेकर इंजन की तरफ पहुंच जाते थे और ड्राईवर के मुहं की तरफ

देखते थे कि इन को कुछ पीने का पानी मिल जाए। चेयरमैन साहब, एक बार भोलाभाई देसाई ने सैंट्रल असैम्बली में बोलते हुए अंग्रेजो को चैलेंज किया था कि तुम अपने राज में लोगो को पीने का पानी भी मुहैया नही कर सकते। उस वक्त तो गैर हकूमत थी और गुलामी का जमाना था लेकिन जिस वक्त दे ा आजाद हुआ तो हम लोगों नै सोचा, चूंकि अब मुल्क अजाद हो चुका है अब हमे पीने का पानी मुहैया किया जाएगा। लेकिन चेयरमैन साहब, 1952 तक हरियाणा ने और हिसार में खासतौर पर पीने का पानी देने की कोई स्कीम नही बनाई गई, सन् 1952 के बाद जब ज्वायंट पंजाब में स्कीम बनी तो सन् 1958 तक कूल 203 गावों में ही पीने के पानी का इंतजाम किया गया, यानि एक साल में मु कल से कोई 12 गावं कवर होते है। जिस वक्त चौधरी बंसी लाल जी ने मुख्य मंत्री का कार्य भार सम्भाला यह जो उन के अहद का 6 साल का पीरियड आज तक गुंजरा है मैं इसे अगर यह कहू कि यह गोल्डन पीरियड आफ द हिस्ट्री आफ हरियाणा है तो भाायद इसमें कुछ गलत नही होगा। सब से पहले चौधरी बंसी लाल जी ने इस बात की और खास तौर से ध्यान दिया और देना भी जरुरी था क्योंकि वह खुद एसे इलाके के रहने वाले थे जहां पर पीने के पानी की बडी भारी समस्या थी। चेयरमैन साहब इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि चौधरी बंसी लाल जी के चीफ मिनिस्टर बनने के बाद पीने के पानी देने की तरफ ध्यान दिया गया है लेकिन इस के बावजूद भी पीने का पानी दस्तयाब करने की तरफ जितनी तेजी से कदम बढाना चाहिए था उतनी तेजी से नही बढाया गया। तमाम हरियाणा के लिए 1.75 करोड का कुल बजट इस साल के लिए मुहैया किया गया था। ठीक है इस में ज्यादा हिस्सा जो कि 1.44 करोड

रुपया देहातों को पानी देने के लिए रखा गया है और इस मे 100 देहातो में पानी देने की स्कीम पूरी हो जाएगी। लेकिन मैं समझता हूं कि यह बहुत थोडी रकम है। यहां पर फाईनैंस पार्सल्टी की बात हर वक्त की जाती है। मैं आप की मारफत चेयरमैन साहब यही कहूंगा कि सरकार को अगर कोई स्पै ाल सैंस लगाकर भी पीने का पानी का इन्तजाम करना पडे तो यह जल्दी से जल्दी करना चाहिए और मैं समझता हूं कि इस में इस हाउस के किसी मैंबर को भी एतराज नही होना चाहिए। यहां पर क्वै चन आवर में ओपोजी ान वाले एक भाई ने कहा था कि जिस स्पीड के साथ गवर्नमैंट इस काम को करना चाहती है, जितनी थोडी रकम प्रोवाईड की गई है, उस के हिसाब से तो भाायद पीने का पानी तमाम देहातों को देने के लिए 50 साल लग जाएं। तो मैं अपनी सरकार से यह पूछना चाहूंगा कि क्या 50 साल तक हम इन्तजार कर सकते है, क्या पीने के पानी के लिए हमें और 50 साल इन्तजार करना पडेगा। चेयरमैन साहब पानी और हवा के बारे में यह कहा जाता है कि इसकी कोई कीमत नही है यहसब मुफ्त मिल सकते हैं। तो पानी जिस के लिए सब का हक है कि मुफ्त मिलना चाहिए उसके लिए हमें 50 साल और इन्तज़ार करना पडेगा। मैं समझता हूं कि यह एक आजाद मुल्क के लिए बायसेफ़ख बात नही है। इसलिए चाहे आप को कुछ भी करना पडे, आप को गवर्नमैंट आफ इंडिया पर जरुर प्रै ार डालना चाहिए, आपको पीने के पानी का प्रबंध जल्द से जल्द करना चाहिए। ऐसा कोई क्षेत्र नही है जिसमें हम गवर्नमैंट आफ इंडिया के साथ हाथ न बंटाते हो। हिन्दोस्तां में दो ही तो प्रदे ा हैं जिन की ओर सारा हिन्दोस्तां देखता है। तो चेयरमैन साहब पीने के पानी की जो आज समस्या है इसकी तरफ सरकार को

खास ध्यान देना चाहिए। मैं अब ज्यादा न कहता हुआ चंद बातें अपने हलके के बारे में भी कहना चाहता हूं। वैसे तो मेरा हलका अर्बन कहलाता है लेकिन कुछ देहात उसके साथ जुडे हुए है और मेरे हलके में दो देहात खास तौर पर ऐसे हैं जहां पानी ब्रेकि ा है और जोहड के किनारे जो कुआं है उससे ही गांव की सारी आबादी पानी लेती है लेकिन उस में पानी पर्याप्त नही है। ये दो गांव हैं तलवंडी राणा और गंगवा। गर्मियों में खास तौर पर कुएं का पानी सूख जाता है और जब औरतें कुएं पर पानी लेने जाती हैं तो पानी की कमी की वजह से उनमें आपस में झगडे होते है। एक बात और है जिसकी तरफ मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह पालिसी की बात है लेकिन पालिसी भी तो सरकार ही बनाती है और हालात के मुताबिक वह बदल भी सकती है। वह पालिसी यह है कि जब तक बैनिफि ारी भोयर गांव वालों की तरफ से जमा न कराया जाए वाटर सप्लाई स्कीम लागू नही की जा सकती। मैं इस चीज के खिलाफ हूं। चेयरमैन साहब, यह ठीक है कि मैं अरबन हलके को रिप्रैजैंट करता हूं लेकिन इसका मतलब यह नही कि मैं दूसरो की बातें सरकार के ध्यान में नही ला सकता। जब भाहर के अंदर वाटर सप्लाई स्कीम बनती है तो भाहर के जराये तो बहुत वसीह देते हैं वह पैसे दे सकते है और म्युनिसपैल्टी रुपया मुहैया कर सकती है। लेकिन अभी तक देहात के पास इतने जरिये नही हैं और खास तौर पर उन देहातो के पास जिनकी पंचायत की आमदनी बहुत थोडी है। इसलिए एसे केसिज़ के बारे में ध्यान दिलान जरुरी है। मिसाल के तौर पर हमारा तलवंडी राणा गांव है उसकी पंचायत की कोई आमदनी नही है क्योंकि उनके पास कामॅनलैंड नही है जिससे आमदनी हो सके और एसे गांव जिनके पास पैसा नही है वा बैनिफि ारी भोयर नही दे

सकते और यह दिये बगैर उनके लिए वाटर सप्लाई स्कीम लागू नही हो सकती। तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि यह चीज हटनी चाहिए और जिन देहात के अंदर कुओं में पानी नही है और पर्याप्त मात्रा में पानी नही है सूख जाता है वहां सरकार की तरफ से जल्दी से जल्दी नहरी पानी के जरिए पीने का पानी दिया जाना चाहिए और जिन देहात के पास आमदनी के साधन नही जिनकी माली हालत मजबूत नही कि बैनिफि ारी भोयर दे सकें उनका बैनिफि ारी भोयर माफ करके वहां पीने का पानी दिया जाए और यह स्कीम लागू की जाए। मैं आपके द्वारा सरकार का ध्यान इन दो गांव की तरफ दिलाना चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि इन दोनो गांव में पानी की स्कीम जल्दी से जल्दी लागू की जायेगी। इन भाब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव की हिमायत करता हूं और चाहता हूं कि इसके साथ ज़िला हिसार का नाम भी जोड दिया जाए।

श्रीमती लज्जा रानी (बाधडा): चेयरमैन साहब, इस प्रस्ताव पर बोलते हुए राव बंसी जी ने और कटारिया जी ने फौजियों की बात करके उन इलाको के लिए पानी की मांग की है और मैं भी इस प्रस्ताव पर मेरा हलका फौजी होने के नाते बोलना चाहता हूं। मेरे स्वर्गवासी पजिदेव मेजर साहब ने दादरी के अंदर जनरल हरबख्भा सिंह जी के समय में फौजी दफ्तर भर्ती के लिए खुलवाया था। उसकी अब क्या हालत है उस तरफ मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहती हूं। जब कोई बच्चा दे ा की सेवा के लिए दे ा की रक्षा के लिए अपनी छाती पर गोली खाने के लिए फौजी दफ्तर में जाता है तो वह वहां तब तक दाखिल नही हो सकता जब तक कि वा पांच सौ रुपये न दे दे या कम से कम चार सेर घी न दे दे। कितनी हैरानी की बात है कि यह किए

बिना बगैर कोई भी नौजवान वहां भर्ती नही हो सकता। हम अपने इलाके की फौजी होने के नाते बडी तारीफ करते हैं लेकिन वहां यह हालत हो रही है कि कोई दे ा की रक्षा के लिए अपनी छाती में गोली खाने के लिए भी बिना पैसे दिए दाखिल नही हो सकता। बाकी पानी जो हालत वहां पर है और मैं आ ाा करती हूं कि हमारे महेन्द्रगढ को कम से कम फौजी होने केनाते पीने के पानी के मामले में प्रैफरैंस दी जाए और इन अलफाज़ के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करती हूं।

श्री के0 एन0 गुलाटी(फरीदाबाद): चेयरमैन साहब, मैं इस प्रस्ताव की ताईद करने के लिए खडा हुआ हूं और मैं इसकी पूरजोर ताईद करता हूं ओर इस बारे में अपने ख्यालात सदन में पे ा करना चाहता हूं। बडे अफसोस की बात है कि 27 साल की आजादी के बाद भी हमारे यह हालत है कि बहुत सारे गांव में पीने का पानी भी हम नही दे पायें है। मीठा पानी जिंदगी की सब से जरुरी चीज है और सरकार को बडी तेजी के साथ इस तरफ कदम उठाने चाहिए। मैं हरियाणा सरकार को और इस सरकार के चीफ मिनिस्टर साहब को बधाई देना चाहता हूं कि हरियाणा बहुत तेजी के साथ तरक्की के रास्ते पर चल रहा है और प्रदे ा के अंदर काफी डिवैलपमैंट के काम हुए हैं। रोडज, बिजली, आबपा ाी और दूसरे हम मामले में हरियाणा तरक्की के रास्ते पा आगे बढा है जिसके लिए हरियाणा निवासियों को फख्र है। लेकिन मीठे पानी के मामला में काफी दिक्कत है। यह ठीक है कि समय के अनुसार यह काम भी तेजी के साथ किया जा रहा है और काफी गांव को मीठा पानी दिया भी गया है और दिया जा रहा है लेकिन जो गांधी जी का स्वप्न था कि आजाद भारत में हर इंसान को कम से कम जरुरियाते जिंदगी मुहैया हो वह पूरा नही हुआ ओर उस

तरफ हरियाणा सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं और गांधी जी के स्वप्न की याद दिलाता हूं। मीठापानी हर इंसान के लिए चाहे वह भाहर में रहता है चाहे देहात में रहता है जरुरी चीज है और यक कै ा प्रोग्राम बना कर चाहे सडको बिजली वगैरा के काम पीछे कर दिये जाएं लेकिन मीठा पानी हर इंसान को जल्दी दिया जाए। मैं मानता हूं कि सूखे और बैकवर्ड एरियाज को प्रैफरेंस दी जाए लेकिन इसके साथ साथ दूसरे इलाको के लिए भी जरुरी है कि उनको मीठा पानी दिया जाए। एक बात मैं सुझाव के रुप में आपके सामने रखना चाहता हूं। हमारे भारत में हर साल बहुत फ्जड्ज़ आते हैं और करोडो का नुकसान होता है लेकिन आज तक कोई ऐसी प्लानिंग नही बनी कि इस पानी को काम में लाया जाए। मिसाल के तौर पर असम में हस साल फ्लडज़ आते हैं और भारी नुकसान होता है। सारी स्टेट्स कुआर्डिने ान करके इस फ्लड वाटर को कंट्रोल करके आबपा ी के लिए फिल्टर करके मीठे पानी के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है और जहां मीठे पानी है लेकिन वह वेस्ट होता है। उसकी वैस्टेज चैक की जाए तो यह मीठा पानी दूसरे कमी वाले इलाको में दिया जा सकता है। मैं यह भी महसूस करता हू कि आफीि ायल्ज़ की तरफ से मीठा पानी देने के मामला में गलत प्लानिंग भी चलती है और कुछ करप ान भी चलती है। मैं अफसरान से और चीफ इंजिनियर साहब से कहना चाहता हूं कि वह इस करैप ान को चैक करें और पानी के इस्तेमाल के बारे में सही प्लानिंग बनाये ताकि पानी वेस्ट न हो। यह जो कंट्रैक्टर्ज़ पूल सिस्टम है इस में यह होता है कि मैटीरियल फस्ट क्लास लगना चाहिए वहां थर्ड क्लासॅ मैटीरियल लगता है और जहां सौ बोरियां सीमेंट दी जाती है वहां दस लगाई जाती है। यह बात

अफसरान के नोटिस में भी होगी। फिर टयूबवैल्ज़ खोदे जाते है तो उस में यह होता है कि पचास फिसदी खोदने के बाद बंद कर दिये जाते है कि पानी नही मिला। इस में ऐसी प्लानिंग हो कि पहले बकायदा चैक करने के बाद खुदाई कि जाए कि पानी मिलेगा या नही मिलेगा। फिर आप देखें कि अगर टयूबवैल सरकारी तौर पर खोदा जाए तो उस पर एक लाख लागत आती है लेकिन अगर वही टयूबवैल प्राईवेट एजेंसी से खुदवाया जाए तो पचास हजार लगते हैं यानि आधा खर्च आता है। तो मैं अर्ज करता हूं कि अगर प्राईवेट एजेंसी आधा खर्च करके उसे बना सकती है तो आफी ाल एजेंसी को भी .....

चौधरी पीर चंदः आन ए प्वायंट आफ आर्डर। चेयरमैन साहब, आठ ही मैम्बर बैठै है और कोरम नही है.....

श्री सभापतिः कोरम पूरा है, आठ का ही होता है।

श्री के0 एन0 गुलाटी(फरीदाबाद): तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि मीठा पानी देने के मामला में प्रापॅर प्लानिंग की जाये और इस करप् ान को खत्म किया जाये क्योंकि यह जनता का पैसा है इसका सही इस्तेमाल होना चाहिए। पैसा सही ढंग से इस्तेमाल हो तो चेयरमैन साहब, आप बताएं पानी कैसे जल्दी नही दिया जा सकता। जो इस पर खर्च होता है उस सारे एक्सपैंडीचर को चैक करना निहायत जरुरी है। मैं इसी आईटम पर बोल रहा हूं कि आफिसिज़ के अंदर जब कांट्रक्टर को चेक किया जाता है तो 10 परसैंट कै ा रख लिया जाता है। यह जो सिस्टम चल रहा है इसको ओवरहाल किया जाए तभी जल्दी पानी मिल सकेगा। चेयरमैन साहब, मीठे पानी का रैजोलयू ान हमारे सामने है। पानी का ताल्लुक हमारी सेहत के साथ है, सैनिटे ान के साथ है।

अगर हम पानी का कै ा प्रोग्राम बनाकर दे देंगे तो हमारी सेहत भी अच्छी रहेगी, हर हिंदूस्तानी की, हर हरियाणा वासी की सेहत अच्छी रहेगी क्योंकि पानी के सैनीटे ान के साथ गहरा ताल्लुक है। पानी न हो तो सैनीटे ान, सिवरेज सिस्टम काम नही कर सकता, कुनैक ान लेना ही फिजूल है। मैं थोडा सा फरीदाबाद की तरफ भी जाना चाहूंगा। मेरे इलाके में 109 गांव हैं। 109 देहातो में पानी की बहुत तकलीफ है। इनके साथ में भाहरी इलाके भी लगते हैं। वहां मीठे पानी की बहुत जरुरत है और मीठे पानी के ट्यूबवैल खोदे जाने चाहिए। जो टयूबवैल खुदे हुए है उन में पानी का जितना डिस्चार्ज होना चाहिए उतना नही है। यह भी गलत प्लानिंग के अंदर आ जाता है। चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो रैजोल्यू ान हमारे सामने है यह बडा अहम है, इसकी तरफ सरकार को और खास तौर पर सैक्रेटरी साहिबान को जल्द तवज्जोह देनी चाहिए और एक कै ा प्रोग्राम बनाकर मीठे पानी का इंतजाम करें। बे ाक ये प्रोयोरैटी सूखा ग्रस्त इलाको को दें, फिर बैकवर्ड एरियाज़ को दें और फिर इसके बाद सारे हरियाणा के अंदर कै ा–प्रोग्राम बनाकर इस समस्या को हल करने की कोि ा ा करे। मेरी आपसे यह रिक्वैस्ट है।

राव अभय सिंह (रेवाडी): चेयरमैन साहब, आज इस सदन में राव बंसी सिंह और राव दलीप सिंह जी ने एक रैजोल्यू ान द्वारा जिला महेनद्रगढ के बेकवर्ड इलाको के लिए मीठा पानी देने के लिए गवर्नमैंट से मांग की है। जिस में हाउस को कहा गया कि इस रैजोल्यू ान को मुंत्फिका तौर पर तारीफ करें और गवर्नमैंट को रिकमैंड करें। मैं उनको इसके लिए मुबारकबाद देता हूं और अपने साथियों से, एम0 एल0 एज0 से हाउस को पुरजोर अपील करुंगा कि वे

इस रैजोल्यू ान की मुंक्फिका तौर पर तारीफ करें और गवर्नमैंट को रिकमैंड करें। चेयरमैन साहब, पीने के पानी का बहुत भारी मसला है। मुझे याद है कि सन 1952, जब युनियन पंजाब था ओर मैं पहली दफा पंजाब के सदन में चुन कर आया था। उस वक्त भी हम जोर लगा रहे थे कि इस इलाके को पीने का पानी मुहैया किया जाए। पहले रेवाडी तहसील गुडगांव में थी और महेन्द्रगढ पैप्सू में था। उस वक्त से मेरे साथी जोर लगा रहे थे कि रेवाडी तहसील खारी चक का इलाका है, वहां पर मीठा पानी दस्तयाब नही होता। हमने काफी जोर लगाया लेकिन कामयाब नही हुए, यह तो आपको पता ही है। चेयरमैन साहब, यूनियन पंजाब में हरियाणा के लोगो के साथ बेइंसाफी होती थी और यही वजह थी कि हरियाणा आज वजूद में आया, इसके बाद यह मसला जोर पकडता रहा और मैं समझता हूं कि जब से चौधरी बंसी लाल की हकूमत आई तो जिला महेन्द्रगढ में और रेवाडी तहसील में खास तौर पर काफी इलाको केा पानी दिया गया। जो घरेना वाटर सप्लाई स्कीम, मसानी वाटर सप्लाई स्कीम तथा ढडोली वाटर सप्लाई स्कीम है इन तीनो से कम से कम 50–60 गावों को हमारी तहसील में पानी दिया गया। इसके बावजूद भी चेयरमैन साहब, आज महेन्द्रगढ जिले का बहुत सा इलाका खारा पानी का है। जो काम हुआ है वह काफी हुआ है लेकिन मसले को देखते हुए अभी बहुत पीछे हैं, काफी काम होना बाकी है। बहुत से इलाके एसे हैं जहां पीने का पानी बहुत दूर से लाना पडता है। जैसा कि राव बंसी सिंह ने कहा है ओर दूसरे साथियों ने कहा है कि यह इलाका ऐसा है जिसके दे ाभक्तो का मुकाबला कोई नही कर सकता, इनकी मिसाल कहीं नही मिलती। आपने सन् 1857 की स्थिती देखी होगी। मैं समझता हूं कि यह रैजोल्यू ान बडा अहम है

और वहां के गाव इस के लिए डिजर्व करते है कि मीठे पानी के लिए जल्दी से जल्दी इंतजाम किया जाए। जैन साहब ने अपनी स्पीच में फरमाया था और मैं भी इस बात को समझता हूं कि पीने का पानी के लिए जो हमारी गवर्नमैंट ने पैसा ऐलोकेट किया है वह बहुत कम है। इसी कमी के कारण जिला महेनद्रगढ के इलाको में या दूसरे इलाकों में जहां पानी की कमी है, इतने कम रुपयों में पानी देने में बहुत अर्सा लगेगा। मेरी हाउस को ओर गवर्नमैंट को सजै ान है कि जैसे सडको और बिजली के लिए कै ा प्रोग्राम बनाया था, जैसे गुलाटी साहब ने कहा कि इसके लिए जब तक कै ा प्रोग्राम नही होगा, वार फुटिंग का काम नही होगा तब तक यह काम पूरा नही होने वाला। अगर होगा भी तो कम से कम 20–30 साल लग जाएंगे। सरका का या फरज़ेअलबीन है कि कम से कम लोगों को मीठा पानी जरुर दें। मीठे पानी के बारे में मेरे इलाके में भी काफी तकलीफ है जहां पर कि स्कीमें बनी हुई हैं। उन स्कीमो की तरफ भी मैं अपनी गवर्नमैंट का और अफसरान का ध्यान दिलाना चाहता हू। रेवाडी तहसील में जडथल वाटर सप्लाई स्कीम है जो मेरे इलाके के 50–60 गावों को कवर करती है और इन गावों में पानी की बडी तकलीफ है। इन के लिए गवर्नमैंट थोडा बहुत ही रुपया दिया है लेकिन मैं समझता हूं कि वह नाकाफी है। डिपार्टमैंट को इन स्कीमो को जल्दी से जल्दी भ्ाुरु किया जाना चाहिए। दूसरी झावुबा सुलखा वाटर सप्लाई स्कीम है इसके लिए भी मैं सरकार से कहूंगा कि जल्दी से जल्दी चालू किया जाए। एक छोटी सी स्कीम मसानी वाटर सप्लाई स्कीम है। इस स्कीम को गांव ढंगरवास, फडेरी, रामगढ, भगवानपुर, टरकियावास और बुरानी तक एक्सटैंड कर दिया जाए। मैंने इस के बारे में चीफ दंजीनियर साहब से कहा था कि इन

तीन चार गांवों तक एक्सैंट कर दिया जाए। थोडे से पैसो में ही डिपार्टमैंट इनको चालू कर सकता है। तो इसके लिए मैं अपनी सरकार से कहूंगा कि जल्दी से जल्दी इन गावों केा कम से कम पीने का पानी तो मिल जाए। इसके साथ ही मैं फिर हाउस के अपने साथियों से पुरजोर अपील करता हूं कि इस रैजोल्यू ान की वे मुतफिका तौर पर ताईद करें। कुछ साथियों ने कहा कि कुछ जिलों के इलाके ऐसे है जिनमें वाकई ही पानी की बहुत दिक्कत है। वे लगभग दो चार तहसीलें हैं। अगर इनका नाम भी इस रैजोल्यू ान के साथ जोड दिया जाए तो उसके लिए भी मैं मुत्फिक हूं।

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त): आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। यह जो कानकोक्टिड भाब्द का प्रयोग किया है, इसको मैम्बर साहब को वापिस ले लेना चाहिए। यह भाब्द ठीक नही है।

श्री अमर सिंह: मैं इस भाब्द को विदड्रा करता हूं। चेयरमैन साहब, मैं अर्ज कर रहा था कि 27 साल के अरसे में, जो बहादुर इलाका है जैसे महेन्द्रगढ, झज्जर, भिवानी और बवानी खेडा, और रुहनात के इलाके हैं जिन्होने 1857 में अंग्रेजो के खिलाफ बगावत की थी उनको पहले भी काफी सजा मिल चुकी है। ज्वायंट पंजाब में भी सजा मिली है लेकिन आज तो खु ाकिस्मती है इस इलाके की कि वहां का ही चीफ मिनिस्टर हैं। हमें इस बात को गौरव है उनका ध्यान उन टिब्बों पर पानी पहुंचाने का है लेकिन फिर भी मैं अर्ज करुंगा कि वार वेसिज़ पर इस बात को ले कर हर गावं को पीने का पानी और नहरी पानी पहुचाया जाए। वे लोग आज भी जोहडो का पानी पीते है।

चेयरमैन साहब, मैं आपके जरिए सरकार से निवेदन करुंगा कि जो प्रस्ताव रखा है इसको पास किया जाये और प्राथमिकता दी जाये। जिस तरह से कै ा प्रोग्राम से बिजली लगायी गई, जिस कै ा प्रोंग्राम से रोड्ज का इंतजाम किया गया उसी प्रकार से वाटर सप्लाई स्कीम चालू की जाये। इस स्कीम पर चाहे 75 करोड की बताए एक अरब रुपया खर्च हो। लोगों केा जिंदा रहने के लिए पानी सब से जरुरी चीज है। यह हिस्टौरिकल फैक्ट है कि जब अमर सिंह राठौर ि ाकार खेलने गए हुए थे तो अजमल खां पानी की प्यास में तडप रहा था। उसने जब खान को तडपते हुए देखा तो उसने अपनी गागर से पानी पिलाया। जब अजमल खां हो ा में आया तो उसने कहा कि मैं अपनी जिंदगी आपके हवाले करता हूं। जब भी कभी आप पर मुसीबत आएगी, मैं अपनी जान की बाजी लगाऊगां। यह एक हिस्टौरिकल फैक्ट है कि जब अमर सिंह राठौर पर चढाई की गई उसी अजमल खां पठान ने वहां के उस वक्त के बाद ााह का मुकाबला किया और अमर सिंह राठौर की जान बचायी। इसलिए पानी जैसी सस्ती चीज जो जिंदगी के लिए अमृत है का होना जरुरी है। चेयरमैन साहब, मैं इस रैज्योलू ान की पूरजोर अल्फाज़ में हिमायत करता हूं। और आपके जरिए सदन से यह रिक्वैस्ट करुंगा कि यह एक जायज प्रस्ताव है, इस इलाके को प्राथमिकता दी जाये और यह मानकर सरकार को चलना चाहिए, यह मेरी गुजारि ा है।

चौधरी मेहर चन्द (बडौपल): चेयरमैन साहब, राव बंसी सिंह जी और राव दलीप सिंहजी को जो नान–रैज्योल्यू ान हाउस के ज़ेरे गौर है, वह एक बेसिक रिक्वायरमैंट आफ लाईफ के बारे में है। इस वास्ते मैं यह महसूस करता हूं कि इस रैज्योलू ान पर किसी मज़ीद

डिबेट के, यूनेनीमसली फौरन पास किया जाये क्योंकि इस रैज्योलू ान पर मुखालिफत करने का तो काई सवाल ही पैदा नही होता। जहां तक मेरा ताल्लुक है, मैं इसको होल–हर्टिडली स्पोर्ट करता हूं। पीने के लिए पानी आबपा ाी के लिए पानी एक जिंदगी है यह किसी को भूलना नही चाहिए। जिस तरह से पानी जिंदगी कायम रखने के लिए है इसी तरह से आबपा ाी के लिए भी पानी बहुत जरुरी है। अगर आबपा ाी के लिए पानी नही है तो भी जिन्दगी खत्म हो जाती है क्योंकि फिर प्रोडक्ा न का सवाल आ जाता है जिससे हम अपनी लाईफ को मैंनटेन करते है। चेयरमैन साहब, इस फसिल्टी को, जो रैजोल्यू ान के मूवर है, उन्होने केवल महेन्द्रगढ तक ही रखा है। यह बात ठीक है कि हरएक पहले अपने घर को देखता है इसलिए उन्होने इसे केवल महेन्द्रगढ डिस्ट्रीक्ट तक सिमित रखा। ठीक है, उनका दुख भाायद हमारे से भी ज्यादा होगा। मैं यह नही कहता कि कम है लेकिन हमारा भी कुछ कम नही है। ताहम, हमारा दु:ख उनसे भी ज्यादा है। तो भी मैं उनको इस मामले में स्पोर्ट जरुर करुंगा क्योंकि इंसान को सैल्फी ा नही होना चाहिए। चेयरमैन साहब, मैं इनके साथ ही गवर्नमैंट से यह अर्ज करुंगा कि इस फैसिलिटी को हरियाणा के उन सारे एरियाज़ तक ऐक्सटैंड किया जाए जो ड्राट एरियाज़ हैं और जहां पर खारा पानी है, दोनो चीजें होनी चाहिए। ड्राट एरियाज़ तक और जहां पर खारा पानी है, वहां तक हरियाणा सरकार को इस फैसिलिटी को ऐक्सटैंड कर देना चाहिए। हरियाणा सरकार ने जो अब तक प्रोग्राम बना रखा है, मुझे पता नही, वह प्रोग्राम इस नजरिये को मद्देनजर रखते हुए बनाया है या किसी और बेसिज़ पर बनाया है। अगर उसमें यह नजरिया नही रखा गया तो मै। आपकी मार्फत हरियाणा सरकार से

यह दरख्वास्त करुंगा कि उनकी जो यह फिफ्थ फाईव प्लान है, जिस का यह 1974–75 पहला साल है, इसके प्रोग्राम को री–ऐग्जामिन करके अगर जरुरत समझी जाए तो इन दी लाईट आफ आबज़र्वे ान मेड इन दी हाउस, प्रोग्राम मौडीफाई होना चाहिए। इसके अलावा चेयरमैन साहब, मैं एक बात और भी महसूस करता हूं। मैं यह समझता हूं कि गवर्नमैंट इस भाोअबे की तरफ ध्यान तो दे रही है लेकिन तेजी कुछ ज्यादा होनी चाहिए। जिन्दगी के लिए मेन आयटम एक यह भी है। बडे आदमियों ने भी यही कहा है। कुटे ान्ज़ की जरुरत नही है। यह तो एक ऐसी चीज है जिसमें कुटे ान्ज़ की जरुरत नही मालूम देती। यह लाईफ के लिए एक बेसिक जरुरत है कि आबपा ाी के लिए पानी चाहिए, चाहे वह नहर का हो, चाहे ट्यूबवैल का हो और पीने के लिए मीठा पानी चाहिए। मैं यह जरुर कहूंगा कि जिन एरियाज़ में मीठा पानी है, टयूबवैल लगे हुए हैं। वाटर–वर्क्स के लिए प्रायोरिटी उन्ही एरियाज़ को दी जानी जरुरी है जो ड्राट एरियाज़ हैं या जहां पर खारा पानी है।

इसके अलावा अब मैं कुछ बातें अपनी गवर्नमैंट से अपनी कांस्टीच्यूएंसी की बाबत भी अर्ज करना चाहता हूं। अपनी कांस्टीच्यूएंसी के बारे में मैं यह कह सकता हूं कि आप सर्वे करवा कर देख लें, मेरे ख्याल में करीब–करीब सारी कांस्टीच्यूएंसी में खारा पानी है। किसी गांव में मीठा पानी मिल जाए तो मैं कह नही सकता। मैं अपनी कांस्टीच्यूएंसी में पहले तो दो महीने में हर गांव में टूर पर जाता रहता था लेकिन जब से पैट्रोल के दाम बढे हैं, मेरा टूर रिस्ट्रीक्टीड हो गया है। अब मैं इतनी जल्दी हर गांव कवर नही कर पाता, लेकिन मेरी नॉलिज जो है वह ठीक है। पिछले दिनों जून के महीने में मैं एक गांव

भोखपुर गडौली गया। लू चल रही थी। मेरे साथ एक दो साथी और थे। मैंने पूछा सुनाओ भाईयों सब ठीक हैं तो कहने लगे सब ठीक है पर कहने वाली एक बात है। बीच में जब बात कर रहे थे तो मैने कहा की मुझे प्यास लगी है। तो एक भाई ने पानी लाकर दिया। पर वे कहने लगे कि आप पानी पी नही सकेंगे क्योंकि कुछ तो इसें बदबू का ऐलिमैंट है और कुछ पानी में रेत के कण है। मैं चेयरमैन साहब, बडे दु:ख से कहता हूं कि ऐसी रिप्रैंजैटे ान से क्या हासिल है जब हम लोगो को मीठा पानी भी न दे सकें? मेरा दिल भर आया कि मैं एक एम0 एल0 ए0 हूं या क्या हूं जो इनहे पानी भी नही मिल सकता। मैने जब उनसे कहा कि तुम ह्यूमैन बीइंग हो या क्या हो जो ऐसी जिंदगी बसर कर रहे हो। आज जो यह बात मेरे नोटिस में आई, यह बहुत अच्छा हुआ। चेयरमैन साहब, मैने यह सोचा कि अगर मैं अपनी सरकार को एप्रोच करुंगा तो इतनी जल्दी काम बनने वाला नही हैं। मैं सरकार को ब्लेम नी करता उसके भी कुछ हैंडीकैप्स है। सबसे मेन हैंडीकेप पैसा है। किसी भी काम को करने के लिए फाईनेंस की जरुरत होती हैं। एक वाटर वर्क्स बनाने के लिए कल ही वजीर साहब ने मुझे जवाब दिया। ऐसी जवाब जो जवाब नही था। हिन्द से दे दिए और जरब तकसीम मुझ पर छोड दी। मैं यह महसूस करता हूं कि इसके लिए बहुत खर्चा आता है। मैने उस गांव के लिए क्या स्टैप लियां। मैने पूछा कोई कच्ची डिग्गी है। कहने लगे है, मैंने कहा मुझे वहां ले चलो। मैंने उनसे यह कहा कि जैसा भी पानी है, मैं जरुर पीऊंगा। अगर मैं पानी नही पीता तो वे कहते कि बडा अमीर बनता है। वोट किससे लेगा? फिर मैने उनसे पूछा कि पंचायत के पास पैसा कितना है? कहने लगे कि 10,000 रुपया है। मैने कहा कि आप यूं करो कि ईंटे ले आओ।

कहने लगे कि सीमेंट की बिमारी है। मैने कहा कि सीमेंट की बात आप मेरे उपर छोड दो। मैं वहां से सीधा फतेहाबाद आया क्योंकि उस गांव का सब डिविजन फतेहाबाद है। वहां के एस0 डी0 एम0 साहब से कहा कि सीमेंट दे दो। वे बडे भारीफ आदमी है। कहने लगे कि सीमेंट एक इंस्टालमैंट में तो नही दूंगा लेकिन इसकी कमी पूरी कर दूंगा। अब वह डिग्गी नियर कम्पली ान है। मैं उसके पीछे पडा हुआ हूं। मैने नहर के दफ्तर का दरवाजा भी नौक किया। मैं नहर महकमा की भी तारीफ करुंगा क्योंकि उन्होने इसके लिए पूरी हमदर्दी दिखाई। उन्होने कहा कि आपको जो पानी 12:00 बजे लेना है वह इस डिग्गी के लिए दे दिया जाएगा और इसको आप हमे ाा भरा हुआ पाएंगे। इस तरह से थोडा सा छूटकारा मिला है लेकिन यह टैम्परेरी है, इसका जो परमानैंट हल है उसकी तला ा करनी पडेगी और मैं यह कहूंगा कि इसके लिए बहुत जल्दी से जल्दी कदम उठाया जाए। यह तो मैने एक गावं की कहानी सूनाई। इसके आगे एक गांव है अग्रोहा जहां से कि हिंदुस्तान के अग्रवालो का ओरिजन है। चेयरमैन साहब, पिछले दिनो जब मैं कलकत्ता गया तो कुछ सेठ साहिबान से मिला क्योंकि इस तरफ के वहां काफी लोग रहते है। हमने उनके यहां खाना वगैरह भी खाया। मैं डर रहा था कि कही वे सवाल न कर दें और आखिर उन्होने पूछ ही लिया कि चौधरी साहब आग्रोहा किसकी कांस्टीयूएंसी में पडता है। मैंने कहा कि मेरी कांस्टीयूएंसी मे पडता है। उन्होने कहा कि वहां कोई नि ाान होना चाहिए। मैने कहा कि यह नि ाान तो आप लोग ही बनवा सकते हैं। लेकिन वह ऐसा नि ाान न हो कि जैसा एक पंजाब के चीफ मिनिस्टर कामरेड रामकि ान आए और वे किसी के कहने से वहां चले गए और वहां एक बोर्ड लगा दिया इंजिनियरिंग कालेज का।

कुछ दिनो बाद वह बोर्ड उड गया। मै किसी डायरेक ान से अपनी कांस्टीयूएंसी में जाऊं आई मस्ट गो टू आग्रोहा। इस रोड पर मेरे टायर बहुत घीस गए है। क्यांकि मुझे अग्रोहा होकर ही जाना पडता है और कोई एंट्री ही नही है। मैंन यह बात भी कही कि रामकि ान जी जैसा काम नही करना चाहिए। जो काम हाथ में लिया जाए उसको पूरा और पक्का करना चाहिए। मैं तो यह भी कहूंगा कि बगैर मेरी नॉलिज के फाईनेंस मिनिस्टर साहब भी वहां गए थे और लोगों ने उनसे यह दरख्वास्त की थी कि इस गावं में खारा पानी है। अग्रवाल कम्यूनिटी क्या कहेगी कि यह हरियाणा सरकार जो इतनी फराखदिल है उस गांव को मीठा पानी भी नही दे सकती। मेरी प्रार्थना है कि उस गांव को टाप प्रोयोरैटी देनी चाहिए और जहां तक मेरा ख्याल है मैने मंत्री महोदय से बात की है और जो स्टेट मिनिस्टर हैं उनसे गुजारि ा की है। मेरे ख्याल में उनको खुद ध्यान है। मैने तो यह अपोरच्युनिटी ली है उनको ध्यान दिलाने की। इस रेजोल्यु ान के लिए मैटीरियल तो बहुत था लेकिन दूसरा भी रेजोल्यू ान है वह भी बहुत जरुरी है और लोगो ने उसके उपर भी बोलना है। इसलिए मैं जल्दी ही वाइंड अप कर दूंगा। चेयरमैन साहब, किसी चीज पर बोलने का फायदा तभी है जब कि सरकार उस पर अमल करने के लिए तैयार हो। हाउस में बोलने का कोई फायदा ही नही। कितनी ही रिकवैस्ट कर लें अगर ऐक ान नही तो बेकार हैं। चेयरमैन साहब, हरियाणा सरकार के मंत्री जिनके पास यह महकमा है एक और गावं की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं। यह भी मेरे इलाके में पडता है। इसका नाम है किरमारा। यहां एक बहुत प्राचीन ि ाव मंदिर है और उस जगह हर महीने हजार के करीब यात्री आते हैं। वह कहलाता है अगरोहा परगना और परगना

का मतलब है 20–30 गांव वहां दूर के भी लोग आते हैं, बम्बई के सेठ आते है, कलकत्ता के सेठ आते है, यू0 पी0 के सेठ आते हैं और वे लोग यह इम्प्रे ान लेकर जाते हैं कि यह मंदिर है जहां पीने का पानी भी नही है। मैंने आई0 पी0 एम0 साहब के दफ्तर में एक नोट भेजा है वैरी रिसेन्टली कि अगर कुछ नही हो सकता तो खुदा के लिए एक लांगिग टाईप आउटलैट दे दीजिए। इस गांव में पडता है अगरोहा माइनर और नही तो कम से कम नहर का पानी पहुंच जाएगा। डिग्गी तो बनवा लेंगे और साल के अंदर कम से कम जो दो मेले होते है और उनके अंदर हजारों आदमी इकट्ठे होते है उनको सुविधा मिल जाएगी। चेयरमैन साहब, क्वै चन आवर के अंदर एक सुझाव दिया था कि चीजो को स्पीडली करने के लिए कई चीजें होती हैं जिनकी तरफ अगर तवज्जोह दी जाए तो खर्च भी कम आता है और काम भी जल्दी हो जाता है। जो मौजूदा वॉटर वर्क्स है उनमें से कुछ तो इतने अच्छे बने हुए हैं कि उन वाटर वर्क्स से और भी गांव फीड हो सकते है। जो मौजूदा वाटर वर्क्स हैं उनकी तरफ तवज्जोह दी जाए और उनकी फैसिलीटीज़ ऐडजेसेन्ट विलेजिज़ को मुहैया कर दें। यह एक निहायत जरुरी चीज हैं। चेयरमैन साहब, आपकी मारफत सरकार से कहना चाहता हूं कि इसके उपर खास तवज्जोह होनी चाहिए। चेयरमैन साहब, अब मैं दो कपलैट्स कहकर खत्म करुंगा और वे हैं:–

यह माना कि दस्ते सवाली सौ ऐबों का ऐब है,

लेकिन जो सवाली नही वह फ़क्त एक दस्ते गैब है।

इस तरफ भी करम र ाके मसीहा करना

कि तुझे आता है बीमार को अच्छा करना।

चौधरी पीर चन्द(बरवाला–एस0 सी0): चेयरमैन साहब, जो रेजोल्यू ान सदन के सामने हैं वह निहायत ही जरुरी है और जो चीज जिन्दगी के लिए बहुत जरुरी है उसके लिए यह रेजोल्यू ान आया हुआ है। जिस प्रकार से हमारी सरकार ने गांव–गांव में बिजली पहुंच कर हिन्दुस्तान में नाम रो ान किया है उसी तरह से यह भी निहायत जरुरी चीज है। हरियाणा के अंदर बहुत सारे एसे इलाके है ंजहां पानी की बहुत कमी है। हमारे जिले के अंदर भी बहुत सारे गांव ऐसे हैं जहां अब भी खारा पानी है। ऐसे गांव 649 है और ये सारे ऐसे है जहां किसी जगह भी मीठा पानी नही है। मेरे हलके के अंदर करीब 70 गांव ऐसे है, जिनमें खारा पानी हैं। कुछ गांव जैसे बोववा, हसनगढ, लतानी, कुवाखेडा, मललोडा, खेदड, थिरोडी, स्पामसुख, समाण और कनणाडी। मेरे हलके बरवाला में वॉटर वर्क्स है और वहो उडाहणी है इनको अगर बरवाल के वाटर वर्क्स के साथ लगा दिया जाए तो ठीक रहेगा। यहां के लोग उस पानी से गुजारा करते हैं जो थोडा बहुत जोहड में डलता हैं। चेयरमैन साहब, उस जोहड में भी एक महीने में एक बारी ही पानी डलता है। बहुत से ऐसे गांव जो जो दूसरे गांव से पानी लाकर गुजारा करते है। तो मैं सरकार से यह निवेदन करुंगा कि जो फंड्ज़ की कमी के कारण काम बंद किए हुए हैं वह किसी न किसी तरह इनकी तरफ जरुर ध्यान दें। सरकार ने बताया है कि इस स्कीम के लिए उसने 75 करोड रुपया रखा है। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि 75 करोड की बजाय वह 1 अरब रुपया रखे तो भी थोडा है। चेयरमैन साहब, मैं यह बात सदन में इसलिए कह रहा हूं कि इस विभाग के जो मंत्री हैं वे भी इसी इलाके के हैं जिसकी मैं बात कर रहा हूं। वे इस तकलीफ को हर तरह से समझते हैं इसलिए मैं उनसे

पुरजोर रिकवैस्ट करुंगा कि यह मसला बहुत अहम है इसके करने में वे हिचकिचाएं नही। इन भाब्दो के साथ मैं मंत्री महोदय से उम्मीद रखूंगा कि वे इस ओर गौर करेंगे।

चौधरी राम प्र ाद(बावल–अनूसूचित जाति): आदरणीय चेयरमैन साहब, यह रैजोल्यू ान जो राव बंसी सिंह जी ने रखा है मैं इसकी पुरजोर ताइद करता हूं। मीठे पानी की जिला महेन्द्रगढ को बहुत जरुरत है। महेन्द्रगढ के ज्यादातर गावों में खारा पानी है, चेयरमैन साहब, मैं अपने डिविजन रेवाडी की बात बताऊं कि उसके आस पास जितने गांव है सब खारे पानी के हैं और बावल क्षेत्र में भी 75 प्रति ात गावों में खारा पानी है। इस खारे पानी की जगह मीठा पानी देने के लिए गवर्नमैंट ने कुछ स्कीमें भी बनाई है जैसे उहीना स्कीम, प्राणथुरा स्कीम, झाबवा स्कीम और जडथल स्कीमें हैं। हरियाणा सरकार ने ये सारी स्कीमें तो बना ली है लेकिन अभी पूरी नही हुई हैं क्योंकि सरकार कहती है कि उसके पास पैसे की कमी है। मैं मंत्री महोदय से निवेदन करुंगा कि जहां के लिए स्कीम बनी हुई है, उसको जल्द से जल्द चालू करें क्योंकि इन स्कीमो से सैंकडो गांवो को फायदा होगा। चेयरमैन साहब, उहीना जो स्कीम है उससे कई गांवो को पानी मिलता है। इसी तरह से राजगढ है वह राजस्थान के साथ लगता है वहां भी पानी अच्छा है अगर उस स्कीमसे वहीं से पानी लिया जाए तो खर्चा कम आएगा ओर अगर इधर से लेगें तो खर्चा बहुत आएगा। आजकल आप टयूबवैलो के नए क्नेक ान तो दे ही नही रहे हैं और जो पुराने क्नेक ान दे रखें है उनसे पानी की कमी पूरी नही होती। जैसे हमारा रेवाडी भाहर है वहां पर पानी की कमी रहती है। इसलिए मेरा निवेदन है कि अगर वहां भी साहबी नदी के साथ टयूबवैल

लगवा दिए जाएं तो ठीक रहेगा। इसके अलावा कई इलाको में औरते पानी के लिए झगडा करती हैं लेकिन मैने मर्दो को पानी के लिए झगडा करते देखा है। मैंने एक इलाका देखा जो राजपूतो का इलाका है वहां पर मई पानी भरते है। मैं एक गांव में किसी को मिलने चला गया उस गांव में एक मैनेजर भी थे मैने कहा उनसे भी मिल लूं। मैं उनके घर गया तो मुझे बताया गया कि वे पानी लेने के लिए गए हुए है। मैने वहां से चार फरलांग पर जाकर देखा कि एक घडा तो उस मैनेजर के सिर पर था और एक एक बगलो में था। मैने उससे कहा कि तुम बैंक में तो बात नही करते ? तो कहने लगा क्या करें पानी जो पीना है। तो चेयरमैन साहब, यह है पानी की हालत। इसलिए मैं आपके द्वारा मंत्री महोदय से निवेदन करुंगा कि सबसे पहले वे महेन्द्रगढ जिले में मीठा पानी दें। हमारे मंत्री महोदय के पास दो किस्म के पानी है। एक पीने का पानी और दूसरा गहर का पानी। अगर वे हमें नहर का पानी भी देदे तो जो कल्लर का पानी है वह मीठा हो जाएगा और जोहडो में भी पानी आ जाएगा। इसके अलावा मेरे इलाके में तीन–चार गांव ऐसे हैं जिनमें पानी डेढ सौ फुट से भी नीचे है। जब कुए से पानी भरने जाते हैं तो दो–तीन रस्सीयां जोडनी पडती है। तब कहीं जाकर एक दो घडे पानी के मिलते है। यह बात किसी से छिपी हुई नही है, सबको इसके बारे में पता है। चेयरमैन साहब, ज्यादा कुछ न कह कर यही कहूंगा कि महेन्द्रगढ जिले में खास कर बावल में पानी की कमी को दूर किया जाए। वहां पर आप देखें कि चारो तरफ राजस्थान है। रेवाडी के पास साहबी नदी में जब बाढ आती है तो वह बहुत ज्यादा नुकसान करती है। एक चीज और देखिए कि उस इलाके में गेहूं नही होता। वहां पर सरसों के सिवाए कुछ नही होता क्योंकि

वहां का पानी ऐसा है अगर उस पानी को गेहूं या कोई अन्य बीज कर दें तो सारी फसल मर जाती है। तो मैं ज्यादा कछ न कह कर इतना ही कहूंगा कि इस इलाके की तरफ ध्यान दिया जाए और दोनो तीनो स्कीमें जो अधूरी पडी हैं, इन से 100 पचास गावों को पानी मिल सकता है और मैं यह भी कहूंगा कि डहीजा की स्कमी को बडा कर दिया जाए, उस से भी पानी मिल जाएगा। एक पास के गांव में जहां पानी मिला है वहां कर्नल महा सिंह जी भी गए थे और वह ऐलार कर आए कि पियोपर, रामपुरा, इन सब को पानी मिल जाएगा लेकिन आज तक वहां पानी नही मिला, कभी पाईप नही होते और कभी पैसों की कमी पड जाती है, लेकिन जहां पानी मिलता है वहां की भी हालत ऐसी है कि कभी टयूबवैल नही चलता और कभी बिजली नही होती। तो यह एक दूसरी प्राब्लम है। इस के अलावा इन्होने पानी के कैन्क ान तो दे दिए लेकिन एक एक गावं मैं एक नल लगाया हैं। वहां पर रोज झगडे होते है। कर्नल महा सिंह जी पांच 6 गावों में खुद जाकर उद्घाटन करके आए थे। चेयरमैन साहब, एक कुनैक ान के क्या मायने हैं। वहां पर पचास पचास औरते बर्तन लेकर बैठ जाती है। जब नल आता है तो दो चार घडे भर जाते है और फिर पानी बंद हो जाता है। इसके अलावा हरिजनो के मोहल्ले में कोई नल नही है। मैं यह निवेदन करुंगा कि कम से कम तीन नल हरएक गांव में जरुर लगाने चाहिए, एक हरिजनो के लिए, एक स्कूल के लिए और एक गांव के लिए, बस मै ज्यादा न कहता हुआ सिर्फ यही अपील करुंगा कि इन सब बातों को ध्यान में रख कर पानी के मसले को जल्दी से जल्दी हल किया जाए।

राव दलीप सिंह(कनीना): चेयरमैन साहब, इस रेजोल्यू ान के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है और सब मैम्बरान साहिबान ने

अपने–अपने ख्यालात का इजहार किया हैं। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ हरियाणा में सबसे पिछडा हुआ इलाका है और वहां पर पीने के पानी की बडी तकलीफ है, लोगों को काफी दूर दूर से पानी लाना पडता है, गर्मियों के दिनो में पानी जोहडो में भी नही मिलता और जहां कही कुएं है वह भी खु क हो जाते है और इस वक्त वहां पर वाटर लैवल कोई सौ फूट से नीचे जा चूका है। जब हमारे वहां कोई इधर का मेहमान आ जाता है और मीठे पानी का सवाल आता है तो वह सचमुच मीठा समझ कर यह जवाब देता है कि नही मैं तो सादा पानी ही पिउंगा तो फिर लोगों को बताना पडता है कि सादे पानी को ही मीठा कहते है। चेयरमैन साहब, आज आजादी के इतने सालो बाद भी लोग पीने के पानी दो दो मील से गर्मी में लाते है। तो यह हमारे लिए बहुत भार्म की बात है कि आज जो हुकमरान है वह एयरकंडी ांड मकानों में रह सकते है, उन की कोठीयों में गर्म पानी और ठंडे पानी का इंतजाम हो सकता है, उन के पास कारें है और आराम के लिए सोफे और कुर्सियां है लेकिन जब तक लोगों को पीने तक को पानी न मिले तब तक यह उनके लिए कोई भाान की बात नही है। आज आजदी के इतने साल बाद भी अगर हम उनको पीने का पानी नही दे सके तो हमारा सर भार्म से झुकना चाहिए। एक तरफ तो लोग दो–दो तीन–तीन मील से गर्मी में पानी लेकर आते है और हम एयरकंडी ान मकानों में रहते हैं यह कैडिट की बात नही। अभी यहां पर एक भाई साहब गुलाब सिंह ने सुझाव दिया था कि पीने का पानी का इंतजाम करने के लिए वाटर सैंस लगा दिया जाए। मै कहता हूं कि लगा दिया जाए लेकिन मुझे फिर भी भाक है कि हमें फिर भी पानी नही मिलेगा। उस रुपये को भी और और जगहो के लिए खर्च कर

लिया जाएगा। हमें चेयरमैन साहब, अंग्रेजो के जमाने में पानी नही मिला, ज्वायंट पंजाब के वक्त पानी नही मिला और अब अब अगर हरियाणा बनने के बाद भी पानी न मिला तो कब मिलेगा। हमारी सरकार को फोरी तौर पर पहले ऐसे इलाको में पानी देने का प्रबंन्ध करना चाहिए जहां पर पिटीएबल कन्डी ान है। चौधरी मेहर चंद जी ने कहा था, उन लोगेां को कुर्बानी वाकई में करनी चाहिए, जहां नहरें है, जहां पिटीएबल कंडी ान है वहां पानी देना चाहिए, वहां ऐसी हालत है कि गर्मी में कोई आदमी रह नही सकता। बस मैं इतना ही निवेदन करना चाहता था।

सिंचाई और विद्युत मंत्री(श्री बनारसी दास गुप्त): सभापति महोदय एक प्रस्ताव राव दलिप सिंह और राव बंसी सिंह का सदन के सामने प्रस्तुंत है और काफी देर से उस पर चर्चा चल रही है। मेरे साथियों ने जो विचार, जो भावनाएं तथा जो उद्गार इस सम्बन्ध में व्यक्त किए है मैं उन से सहमत हूं। इस बात में कोई सन्देह नही है कि पीने के पानी की बडी भारी समस्या हरियाणा प्रदे ा में है और यह बात भी बिल्कुल ठीक है कि जहां पीने का पानी भी बपलब्ध न हो इस से बडी और कोई तकलीफ किसी व्यक्ति को नही हो सकती। लेकिन उपाध्यक्ष महोदया मैं आप के सामने ऐसे तथ्य भी रखूंगा जिन से यह प्रमाणित होता है कि हरियाणा बनने के बाद कितना ध्यान इस समस्या को हल करने के लिए दिया गया। संयुक्त पंजाब में सन् 1954 के अंदर इस बात की और ध्यान दिया गया कि ग्रामो के अंदर पीने का पानी की सुविधा दी जाए और सन् 1955 में इस पर काम भाुरु हुआ। 1955 से 1966 तक जब हरियाणा अलग वजूद में आया तो केवल 170 गावों को पीने का पानी दिया गया था जिस पर 2 करोड 20 लाख रुपया सरकार

का खर्च हुआ था। उस के पस्चात हरियाणा बनने से सन् 1968 तक 33 गांवो को और पानी देने की सुविधा प्रदान की गई। फिर चौधरी बंसी लाल जी की मौजूदा सरकार आने के बाद इस समस्या की ओर वि ोश रुप से ध्यान दिया गया। यह कोई जबानी बात नही है इसको प्रमाणित करने के लिए मैं आंकडे सदन के सामने प्रस्तुत करने जा रहा हूं। सन 1968 से 31 मार्च, 1969 तक 54 गावों को पानी दिया गया, फिर 1969–70 में 84 गावों केा पानी दिया गया, 1970–71 में 63 गावो ंको और 1971–72 में 125 गावो ंको पीने के पानी की सुविधा प्रदान की गई। फिर 1972–73 में 66 गावों को और पानी दिया गया। इस प्रकार अब तक हरियाणा के अंदर टोटल 714 गावों को पीने का पानी की सुविधा दी जा चुकी है। लेकिन आप जानते है कि हरियाणा के अंदर कुल गावों की संख्या 6731 है उन में से 4180 गावं एसे है जिन में पीने के पानी की समस्या है, या खारा पानी है, या कुओं में कम पानी है या कहीं बिल्कुल पानी नही है। हरियाणा के अन्दर मैंने वे गांव भी देखे है, जो कि मेरे इलाके में मौजूद है, जहां पर किसी प्रकार का पीने का पानी उपलब्ध नही था, वे लोग छोटे–छोटे कुण्ड बनाते थे ओर उस के अंदर बारि ा की एक एक बुंद का पानी इकट्ठा करते थे और उस को ताला लगा कर बंद करके रखते थे जैसे कोई व्यक्ति अपने धन को तिजौरी में रख कर ताला लगा कर, सम्भाल कर रखता है और जब भी जरुरत पडती है तो उस में से एक एक गडवी पानी की निकाल करके निर्वाह करते थे। वहां यह हालत थी कि जब कोई मेहमान जाता था तो उसको पीने के लिए दूध तो मिल जाता था लेकिन पानी नही मिलता था। उपाध्यक्षा महोदया आज उन लोगों को पचास पचास मील लम्बी पाईप बिछा कर पानी पहुंचाया गया है। इस

प्रकार का इंतजाम चौधरी बंसी लाल जी की सरकार आने के बाद किया गया है। कुल 4180 गावों में पीने का पानी की समस्या थी जिन में से 714 गावों को यह सुविधा दी जा चुकी है और उस के बाद 3466 गांव अब भी ऐसे है जिन को पीने के पानी की सुविधा देनी बाकी रहती है। इस केलिए हमने अनुमान लगाया है कि साढे 76 करोड रुपया इन सब गावों को पानी देने के लिए चाहिए। इतना फण्ड हमें मिले तो इन सब गावों को पीने का पानी पहुंचाया जा सकता है। आज कल जो मैटिरियल की कीमते है उनके आधार पर यह अनुमान लगाया गया है।

चौधरी चांद रामः आन ए प्वायंट आफ आर्डर। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा प्रस्ताव तो सिर्फ महेन्द्रगढ जिले के बारे में ही है।

उपाध्यक्षाः चौधरी चांद राम जी आप इसे दोबारा पढिए।

श्री बनारसी दास गुप्तः उपाध्यक्षा महोदया, अगर मैंबर साहिबान सारी स्टेट के बारे में हालात जानना चाहते है ंतो वह बता देता हूं लेकिन अगर खाली महेन्द्रगढ के बारे में ही जानना चाहते है तो वह बता देता हूं। मेरे पास सारे ही आंकडे मौजूद है।

उपाध्यक्षाः यह प्रस्ताव पीने के पानी के बारे में आया है और सारे मैम्बर सहिबान ने अपने अपने हलका के बारे में तकलीफात बताई है और यह मसला भी सारी ही स्टेट का है इसलिए यह ज्यादा ठीक होगा अगर उसे सारे हरियाणा के बारे में ही बताया जाए।

चौधरी चांद रामः मेरी सबमि ान यही थी कि चौधरी बंसी लाल जी के आने के बाद कितने गावं को पानी दिया गया वह बताया जाए और फिर जिलावार भी बताया जाये कि किन जिलों में कितने कितने गावं को उनके आने के बाद पानी दिया गया है।

श्री बनारसी दास गुप्तः मुझे इस बात पर कोई आपत्ती नही है और अगर वह चाहते है कि महेन्द्रगढ जिला के बारे में ही बताऊ तो वह फिगर्ज़ भी मेरे पास मौजूद है। सारी बात बता देता हूं। लेकिन मैं सारी स्टेट के बारे में स्थिती इसलिए बता रहा था क्योंकि जो सम्मानित सदस्य यहां बोले हैं उन में से बहुतो ने अपने अपने हलका के बारे में दिक्कत बताई है। और यह कठिनाई भी सब जगह कम या ज्यादा मौजूद है। इसलिए मैंसारी पिक्चर पे ा कर रहा हूं, लेकिन चांद राम जी को ऐतराज हो तो मैं केवल महेन्द्रगढ की ही बात कर देता हूं।

चौधरी चांद रामः मुझे कोई नही जो बात थी वो मैने बता दी।

श्री बनारसी दास गुप्तः अगर जिलावार फिगर्ज़ पूछना चाहते है कि किस जिला में कितने गावं को पीने का पानी दिया गया उस स्थिती इस प्रकार है।

अम्बाला 136 गांव

भिवानी 230 गावं

महेन्द्रगढ 93 गांव

रोहतक 44 गांव

सोनीपत 6 गांव

कुरुक्षेत्र 10 गांव

जींद 28 गांव

हिसार 90 गांव

करनाल 3 गाव

इस प्रकार 713 गांव के यह फिगर्ज़ मेरे पास मौजूद है–(विघ्न)– करनाल में क्योंकि अण्डर ग्राउंड पानी मीठा है इसलिए वहां पर थोडे गांव को पानी दिया गया–

चौधरी चांद रामः कुल कितने गांव में पीने के पानी की समस्या हैवह भी जिलावार बता दें।

श्री बनारसी दास गुप्तः जिन गावं में पीने के पानी की समस्या है वह इस प्रकार है

अम्बाला 554 गांव

भिवानी 464 गावं

महेन्द्रगढ 623 गांव

रोहतक 431 गांव

सोनीपत 246 गांव

कुरुक्षेत्र 41 गांव

जींद 275 गांव

हिसार 689 गांव

करनाल 45 गाव

चौधरी चांद रामः अब एक और बात बता दें कि जिला महेन्द्रगढ और कुछ दूसरे जिलो में ज्यादा गांव में पीने के पानी की समस्या है लेकिन वहां थोडे गावं को पीने का पानी क्यां मुहैया किया गया और भिवानी में ज्यादा गावं को क्यों दिया गया इसका कारण क्या है?

श्री बनारसी दास गुप्तः उपाध्क्ष महोदया, असल में बात यह है कि चौधरी चांद राम जी को ज्यादा चिढ भिवानी से है। वैसे वह बडे बडे जलसे भी भिवानी में ही करते हैं और–

चौधरी चांद रामः मुझे भिवानी से कोई चिढ नही मैं तो बराबरी की बात कर रहा हूं कि इधर ज्यादा और उधर कम क्यों?

श्री बनारसी दास गुप्तः उपाध्क्ष महोदया, इनकी भिवानी चिढ का एक कारण यह भी हो सकता है कि वहां से इनको चंदा कम मिला हो– यह गिला तो इनको हो सकता है लेकिन जहां तक पीने के पानी देने कीबात है भिवानी में यह तकलीफ ज्यादा थी इसलिए उस और ज्यादा ध्यान दिया गया है। इसी तरह से महेन्द्रगढ मे ंभी ज्यादा ध्यान दिया गया है और आगे जब मैं महेन्द्रगढ और दूसरे जिलो के बारे में विस्तार से बात रखूगां तो आपको पता चलेगा कि सब जिलो की तरफ

पूरा ध्यान दिया जा रहा है और सिर्फ एक जिले की तरफ ही नही दिया जा रहा। तो मैं निवेदन कर रहा था कि हरियाणा के अंदर 3466 गांव ऐसे अब भी है जिन में पीने के पानी की बहुत तकलीफ है।इन सब गावों को पानी की सुविधा देने के लिए हमें साढे 76 करोड रुपया चाहिए लेकिन आप जानते है कि फंडज़ की बहुत कमी है हमारी जो यह पहली अप्रैल से पंचवर्शीय योजना चल रही है इस में हमें केवल 29 करोड रु ग्रामीण क्षेत्र में वाटर सप्लाई योजनाओ के लिए मिले है और इस पैसे से हम 1200 से 1400 गांव तक ही यह सुविधा प्रदान कर सकते है। तो पंचवर्शीय योजना पूरी हो जाने के बाद 2066 गांव ऐसे बच जाते है जिन में यह पीने के पानी की तकलीफ मौजूद रहेगी। अब मैं कह नही सकता कि छटे प्लान में कितना हमें धन मिलेगा और फिर उससे अगली योजना में कितना मिलेगा। यह जो धन की उपलब्धि पर निर्भर करता है कितनी जल्दी हम इस काम को पूरा कर सकते है इसके बावजूद भी उपाध्यक्षा महोदया मुझे इस बात का खेद है कि कुछ पैसे की कमी होने के कारण इस योजना में हमें 29 करोड रु दिए भी गए है उन में से इस योजना के इस पहले साल में हमें रुरल वाटर सप्लाई के लिए केवल 144 लाख रुपये दिए गये है। अगर हिसाब से देखा जाए तो कम से कम पहले साल के पांच करोड रुपया मिलना चाहिए था लेकिन जो प्लानिंग और प्लानिंग बोर्ड है और जो इसका वर्किंग ग्रुप है उन्होने पूरी जांच पडताल करने और सारे साधन देखने के बाद 144 लाख रुपया ही इस साल के लिए दिया है। इसमें हम इस साल 100 गावों को और पीने के पानी की सुविधा दे सकते है। यह हालत और नक ाा है जो मैं सदन के सामने पे ा करना चाहता था। महेन्द्रगढ के बारे में जिसके लिए यह प्रस्ताव आया है, उसकी स्थिती

इस प्रकार है। जिला महेन्द्रगढ में कुल 683 गांव है और उन में से 623 गावं ऐसे है जिन में पीने के पानी की तकलीफ है। इससे आप अन्दाजा लगा सकते है कि जिला महेन्द्रगढ की समस्या बहुत ही गंभीर है इस में कोई सन्देह नही। इन 623 गावों में से 93गावों को अब तक पीने के पानी की सुविधा दी गई है। और बाकी 76 गावों के योजना अंडरप्रोगैरेस है। 31 और गांव की योजना बन कर उसकी एडमिनिस्ट्रेटीव एप्रुवैल ली जा चुकी है। और 76 गांव ऐसे है जिन के बारे में स्कीम बना कर डिवलैप्मैंट डिपार्टमैंट के पास भेज दी गई है। 145 गांव के लिए योजना बनाई जा रही है और इसके बाद 263 गांव बच जाते है अभी 7 जुलाई 1974 को सैनेट्री बोर्ड की मिटिग हुई थी उसमं जो 144 लाख रुपया मिला है उस में से 11लाख 81 हजार रुपया हम ने जिला महेन्द्रगढ को दिया है उन स्कीमो को पूरा करने के लिएजो चल रही है। हमें 4 करोड 16 लाख 87 हजार रुपया और चाहिए केवल जिला महेन्द्रगढ की इस समस्या को दूर करने के लिए। मैने जिला महेन्द्रगढ और सारे स्टेट की स्थिती आपके सामने पे ा की। उपाध्यक्ष महोदया, मैं आपके द्वारा इस सदन को बतलाना चाहता हूं कि इस गम्भीर समस्या की ओर सरकार का पूरा ध्यान है। जहां तक हमारे पास साधन जुटते है और जहां तक हम और साधन जुटा सकते है, इस समस्या को हल करने की ओर हम पूरा ध्यान देंगे। जो पिछडे हुए इलाके और कहरज़दा इलाके हैं उन के लिए हमने एक रियायत दी हुई है कि रुरल वाटर स्कीम के तहत जो 12 फिसदी बैनिफि ायरी भोयर देना पडता है, वह उनका माफ किया हुआ है। जो अकाल पिडित इलाके हैं जैसे भिवानी, रोहतक, झज्जर की तहसील, अम्बाला की नारायणगढ तहसील का इलाका, इन को हमने बैनिफि ायरी भोयर से

एग्जम्पट किया हुआ है, उन से 12 फिसदी भोयर नही लेते। इस प्रकार उपाध्यक्षा महोदया जो पिछडे हुए इलाके हैं उन पर किसी प्रकार का बोझ डाले बिना उन तक पीने का पानी पहुंचाएं। मै सरकार की ओर से वि वास दिलाता हूं कि महेन्द्रगढ, भिवानी, झज्जर का इलाका, और अम्बाले जिले में नारायणगढ का इलाका जो पिछडा हुआ है, इनको इस काम के लिए सुविधा प्रदान करने में टाप प्रोयैरिटी देंगे। मै इस आ वासन के साथ सारी तस्वीर हाउस में रखने के बाद जो प्रस्तावक महोदय है, उनसे प्रार्थना करुंगा कि वे अपना प्रस्ताव वापिस ले लें क्योंकि सरकार को इस तरफ पूरा ध्यान है, पूरे चेश्टा और भाक्ति के साथ इ मसले को हल करने के लिए लगे है। मै पुनः अपने सम्मानित सदस्यों से अपील करुंगा कि इस प्रस्ताव को वापिस ले लिया जाए।

(इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए)

राव बसी सिंह (अठेली): स्पीकर साहब, मंत्री महोदय के आ वासन पर मैं अपना रैजोल्यू ान वापिस लेता हूं।

Mr. Speaker: Is it a pleasure of the House that the resolution be withdrawn

Voices: Yes

Mr. Speaker: The resolution is by leave withdrawn.

The resolution. was, by leave of the House, *withdrawn.*

व्यक्तिगत स्पश्टीकरण–चौधरी चांद राम द्वारा

चौधरी चांद रामः आन ए पर्सनल एक्सप्लेने ान सर। श्री बनारसी दास जी ने यह कह दिया कि मुझे भिवानी से तकलीफ है कि

इन्होने वहां के गावों में पानी क्यो दे दिया। मुझे इससे कोई तकलीफ नही। मैने कहा था कि भिवानी में 713 गावों में ` 630 गावों में पानी दिया। महेन्द्रगढ के 741 गावों में से 93 गावों को दिया और रोहतक के 430 गावों मे से 44 गावों को दिया। तो मैने यह कहा था कि सब जिलो को हिसाब से पानी दिया जाए।

श्री बनारसी दास गुप्तः जिला महेन्द्रगढ में टोटल 683 गावं है और 623 गावों में यह समस्या है। टोटल 700 गांव नही है, 683 है। अब तक अब तक इन में से 100 के करीब गावों को पानी दे दिया है और बाकी के लिए स्कीम चल रही है।

गैर–सरकारी संकल्प–

हरियाणा राज्य में परमाणु केन्द्र स्थापित करने के लिए केन्द्रीय सरकार से निवेदन करने के सम्बन्ध में।

Ch. Ram Lal Wadhwa (Karnal): Sir, I beg to move- That this House recommends to the State Government to approach the Central Government for the installation of an Atomic Station in the State of Haryana.

Mr. Speaker: Motion moved-

That this House recommends to the State Government to approach the Central Government for the installation of an Atomic Station in the State of Haryana.

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, टाईम थोडा रह गया है, सिर्फ 10 मिनट रह गए है, आप हाउस का टाईम ओर एक्सटैंड कर दें, मेरी आपसे रिक्वैस्ट है।

बैठक के समय में वृद्धि

Mr. Speaker: The time of the House is extended by half an hour.

गैर सरकारी संकल्प

हरियाणा राज्य में परमाणु केन्द्र स्थापित करने के लिए केन्द्रीय सरकार से निवेदन करने के सम्बन्ध में (पुनराम्भ)।

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): स्पीकर साहब, भारत सरकार ने अणु विस्फोट करके दे ा की आर्थिक व्यवस्थ को सुधारने के लिए, आर्थिक विकास करने के लिए जो कदम उठाया है वह सराहनीय है। इससे पहले सरकार कहा करती थी कि हम अटौमिक रिसर्च नही करेंगे लेकिन अब इस पर रिसर्च की गई। अब अगर सरकार अटौमिक वैपन भी बनाये तो हम उसका भी बहुत जोरदार स्वागत करेंगे। लेकिन स्पीकर साहब, इस सरकार के सामने मैने जो रैजोल्यू ान प्रस्तुत किया है, उसके प्रस्तुत करने का कारण यह है कि हरियाणा प्रान्त कृशि प्रधान प्रान्त है।यह प्रांत जरायत के उपर निर्भर करता है और 82 फिसदी पापुले ान सरकारी आंकडो के अनुसार एग्रीकल्चर पर इनहसार करती है। हरियाणा की इकोनोमिक सर्वे रिपोर्ट, 1971–72 के अनुसार मैक्सिमम पापुले ान एग्रीकल्चर पर निर्भर करती है। इसमें लिखा है–

"Haryana is predominently an agriculture State. 82% of its population derived livilihood from agriculture."

स्पीकर साहब, इस स्कीम की पोजी ान हो, कि प्रान्त इनहसार ही खेती के ऊपर करता हो और उस के अंदर कुल रिपोर्टिंग

एरिया है हरियाणा का वह 44.2 प्रसैंट हैक्टेयर हो और इस रिर्पोटिंग एरिए में ऐसा एरिया भी भाामिल होगा जो इसके अंदर आये। लेकिन इकोनोमिक सर्वे के अनुसार इरीगे ान के नीचे जो 1972–73 की इकोनोमिक सर्वे रिपोर्ट मेरे पास है उस में लिखा है–

"Irrigation facilities in Haryana are quite wide spread. The total irrigated area in the State in1971-72 was 23.25 lakh hactares. It accounted for 46% of the gross areas sown."

सरकारी आंकडो के अनुसार 46 प्रसैंट एरिया हरियाणा में इरीगेट हुआ है और 54 प्रसैंट एरिया ऐसा है जिसको हम पानी की कमी की वजह से, बिजली की कमी के कारण इरीगेट नही कर सकते। स्पीकर साहब, हरियाणा सरकार कोि ा ा कर रही है कि ज्यादा से ज्यादा एरिया इरिगेट हो। नहरें बनाई जा रही है, मैने नहरो के बारे में सवाल किया था तो उसके जवाब में बताया गया था कि कुछ नहरो के अन्दर सेलाब का पानी इकट्ठा हो जाता है और उस पानी को युटिलाईज करने के लिए इन्तजाम किया ताकि इन नहरो के द्वारा पानी खेतो तक पहुंचा सके। लेकिन कुछ सर्कमस्टांसिस एसे पैदा हो जाते है कि जिनको हम अवाईड नही कर सकते। जैसा की बारि ा का न होना। यह हमारी नजरो के सामने है कि बारि ा पिछले साल भी नही हो पाई और इस साल भी बारि ा नही हो रही है। तो इस हालत में नहरों मे पानी का सैलाब कैसे आएगा। इसलिए सैलाब से जो पानी मुयस्सर होता है वह भी नही होगा। हरियाणा और पंजाब का जहां तक ताल्लुक है, स्पीकर साहब, ये दोनो प्रान्त ऐसे है जो सारे दे ा का अन्न संकट दूर कर सकते है। अगर इन दोनो प्रांतो के पूरे साधन उपलब्ध करवाएं जाएं, बिजली इनको पूरी मिले, पानी पूरा मिले तो यह

दोनो प्रान्त खडे होकर आज जो करोडो रुपए का अन्न कनाडा और दूसरे दे ाो से मंगवाया जाता है, उसको बंद करवाने में मदद कर सकते है। अगर, स्पीकर साहब, बाहक के दे ाो से अन्न मंगवाना बन्द करना है, दे ा को आत्मनिर्भर बनाना है तो हरियाणा और पंजाब को बिजली और पानी के साधन भारत सरकार को देने चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा एरिया इरीगेट हो सके। अगर सरकार सचमुच चाहती है कि दे ा में अन्न संकट खत्म हो तो सबसे पहली आव यकता जो है, वह बिजली की है क्योंकि बिजली के द्वारा ही ट्यूबवैल चलेंगे, अन्य कई प्रोजैक्टस चलेंगे। जहां तक कटाई और दूसरी चीजो का सम्बन्ध है, उसके लिए भी आज म ाीने बन रही है। तो सारी कृशि का इनहसार एक बिजली के ऊपर खडा हुआ है लेकिन बिजली की द ाा जो है, वह सोचनीय है। आज हमारे सामने एक बडे संकट की द ाा बिजली है। उसका भी एक कारण है क्योंकि जहां तक बिजली के उत्पादनका संबंध है, उसके उत्पादन के हरियाणा के अंदर कई साधन नही है। बिजली हमें भाखडा से मिलती है, डेसू से मिलती है। हमें स्पीकर साहब, एक किताब परसों दी गयी जिसका नाम हैः ऐनुअल फानैंि ायल स्टेटमैंट–बजट–ऐस्टीमेट्स 1973–74। इसके पेज 22 पर, स्पीकर साहब, पावर पोजी ान का, पावर प्रोजैक्टस का विवरण लिखा हुआ है इसमें लिखा है कि–

“Power Position and Power Projects”

The main source of supply of power in the Haryana State are Bhakra Nangal Project. I.P. Thermal project and small Thermal Genration sets at Faridabadn and Surajpur. Due to fall in the water level of the Bhakra rsorvior the power position from Bhakra Complex continues to be very tight. Against maximum demand of

669 MW during the year 1973-74, the total available generation capacity from all existing schmes including purchases would be 352 MW, thus there will be shortfall of 317 MW and this will go up furtherrapidly in the subsequent years.

तो ऐग्जिस्टिंग जैनेरेटिंग कैपेसटी जो है वह कहां से है इसके बारे में लिखा है–

"A list of the generation projects at present in operation and the projects taken/proposed to be taken in hand is given below-

Sr No.	Name of the Project	Installed Capacity
1.	Share of Haryana State in the power Generation in the Bhakra Nanga Project as tentatively fixed at 39.5 per cent.	76MW
2.	Indraprastha Thermal Station Delhi1/3rd Share of the total	62.5 MW
3.	Thermal Set at Faridabad	15 MW
4.	Thermal Set at Surajpur	6.8 MW
5.	Diesel Sets at Ambala and Faridabad	3 MW

तो, स्पीकर साहब, हमारे हरियाणा कें अन्दर बिजली के उत्पादन के अपने कोई साधन नही हैं। हैं तो बडे मामूली है। बिजली जितनी मिलती है वह बाहर से मिलती है। तो ऐसी स्थिती के अन्दर आज हम देखते है कि खेतीबाडी के लिए रोज ही इस प्रकार की पुकार रहती है कि बिजली न होने के कारण पानी जो है, वह खेतों को पूरा

नही मिलेगा। अभी धान की फसल होने वाली है, उसके लिए भी पानी पर्याप्त मात्रा के अन्दर देने का इन्तजाम हमारी सरकार के पास नही है। आज ऐसी अवस्था हो रही है कि भाखडा में पानी का जो लैवल है, वह इतनी नीचे चला गया है कि भाायद अगले दो महीनो के अन्दर हमें जितनी बिजली मिल रही है वह भी न मिले। तो आज एक संकट की स्थिती हमारे सामने है और इस स्थिती के अन्दर सुधार आने की कोई बात नजर नही आती।आखिर भाखडा का प्रोजैक्ट जितना काम करता है, उतना ही तो करेगा। भाखडा से जितना हिस्सा हमें मिलना चाहिए उतना ही तो मिलेगा। ठीक है फरिदाबाद और पानीपत में बिजली बढाने की बात हो रही है लेकिन प्लांटस लगने में कितना टाईम लगेगा, कितना रुपया लगेगा और उससे कितना फायदा हम हासिल कर पाएगे, यह भी एक समस्या की बात है। तो अगर हम चाहते हैकि यह हरियाणा प्रान्त विकास की ओर तेजी से दौडे तो हमें इस ओर ध्यान देना पडेगा। खेतीबाडी में दे ा के अन्दर अन्न संकट खत्म करवाने में हरियाणा रीढ की हडडी के तौर पर काम करता है। लेकिन इसके पास अपने रिर्सोसिज़ बहुत कम है। अगर सरकार के पास रिवैन्यू नही आएगाए तो सरकार चाहे जितनी भी खु ानुमा तस्वीर सदन के अन्दर या बाहर रखने की कोि ा ा करे, यह सच्चाई को छुपा नही सकती। प्र नोत्तर काल के अन्दर हम जब भी इनसे कोई सा प्र न पूछें तो यही कहा जाता है कि फंड्ज की कमी के कारणहम इस काम को और आगे नही बढा पाये। मैं यह बात आोचना की नीयत से नही कर रहा, बल्कि वास्तविकता बता रहा हूं कि हरियाणा के पास रिर्सोसिज कम हैं। अब रिर्सोसिज कैसे बढ सकते हैं। जहां तक खेती बाडी बढाने का ताल्लुक है वह इसलिए महत्वपूर्ण है कि हमारे दे ा का बहुत सा अन्न

बाहर से मंगवाना पडता है और उसमें हमारा बहुत सा फारेन ऐक्सचेंज चला जाता है। यदि दे ा के प्रत्येक नागरिक को जो कि इस दे ा करोडो की संख्या में है, अन्न प्रोवाईड करना है, तो उसके लिए चाहे कोई भी प्रान्त काम करता है, उसको भारतीय सरकार को उपयुक्त साधन मुहैया करने पडेंगे। इसमें कोई भाक नही कि इससे उस प्रान्त को भी फायदा होता है जिसको इस तरह के साधन उपलब्ध कराये जाते है लेकिन यह बात भी दरुस्त है कि इससे दे ा का भी भारी फायदा होगा। रिर्सोसिज बढाने के लिए प्रांत की सरकार को भी विचार करना होगा और वे रिर्सोसिंज़ तभी बढेगे अगर हरियाणा इंडस्ट्रीज की ओर ज्यादा ध्यान देगा। तो स्पीकर साहब, इस तरीकेसे मैने यह रेजोल्यू ान मूव किया है क्योंकि हरियाणा सरकार में यह कहा जाता है और ट्रेजरी बैंचीज से मैम्बर साहिबान भी कहा करते है कि हरियाणा के चीफ मिनिस्टर साहब का सैन्ट्रल गवर्नमैंट मे बडा रसूख है, बडा होल्ड है। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा चीफ मिनिस्टर साहब से यह निवेदन करुंगा कि इस होल्ड का और रसूख का फायदा उठाने की कोि ा ा करें और सैंट्रल गवर्नमैंट से कहा जाये कि हरियाणा के अन्दर एक एटोमैटिक स्टे ान लगाया जाए। अगर उन्होने ऐसा कर दिया तो हरियाणा का एक एक व्यक्ति इस चीफ मिनिस्टर को याद रखेगा।

मुख्य मंत्री(चौधरी बंसी लाल): अब क्या आप भूलते है, मुझे तो आप अब भी याद रखते है (हंसी)

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): वह तो आप दूसरी तरह से याद करवा लेते है। यह तो आपके स्वभाव में है। तो स्पीकर साहब,

मेरा इस रैजोल्यू ान का जो भाव है वह यह है कि हरियाणा का विकास, हरियाणा की तरक्की, हरियाणा की बहबूदी बिजली के द्वारा हो सकती है। हम चाहे कितनी ही बिजली भाखडा से लेकर, डेसू से लेकर, थर्मल प्लांट लगा कर इस कमी को पूरा कर ले लेकिन पूर्ण रुप से पचास साल गुजरने के बाद भी हम आर्थिक विकास नही कर पायेंगे, इसलिए यह महत्वपूर्ण बात है। अगर हम चाहते है कि हरियाणा पूरी तरक्की करे तो उसके लिए सैंट्रल गवर्नमैंअ पर पूरा दबाव डालें कि वह हरियाणा के अन्दर एक एटोमिक स्टे ान लगाए। मैं यह भी कहूंगा कि हमारी एक बडी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि सैंट्रल गवर्नमैंट जहां गुजरात के अन्दर, महाराश्ट्र के अन्दर और वेस्ट बंगाल के अन्दर और दूसरी स्टेटस के अंदर बडे बडे प्रोजैक्ट दे रही है लेकिन हरियाणा को आज तक सैंट्रल गवर्नमैंट ने कोई बडा प्रोजैक्ट नही दिया। सैंट्रल गवर्नमैंट की निती बडी भेदभावपूर्ण है। उसे यह नीति नही बरतनी चाहिए। मैं सैंट्रल गवर्नमैंट से हरियाणा की ओर से मांग करता हूं हमारे प्रदे ा के लोगों का जीवन स्तर उठाने के लिए, हरियाणा को विकास की ओर ले जाने के लिए यह एटोमिक स्टे ान लगाया जाये ताकि हरियाणा 55 करोड लोगो को खाद्यान्न दे सके। यहां पर एटोमिक स्टे ान लग जाने से पंजाब, राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदे ा को बिजली मुहैया हो सकती है। इन भाब्दों के साथ मैं आपका म कूर हूं कि आपने मुझे समय दिया और एक बार फिर सरकार से कहूंगा कि वह अपना पूरा रसूख इस्तेमाल करके यहां एटोमिक स्टे ान लगवाने की प्रबन्ध करें।

श्री गौरी भांकर (नरवाना): स्पीकर साहब, आज यह हाउस में बिजली के बारे में रैज्योलू ान आया है। मैं इसका स्वागत करता हूं और मैं आपके द्वारा सरकार से प्रार्थना करता हूं कि जहां पर नहरों

पर छोटे छोटे पचास पचास या सौ सौ फुट के वाटर फॉल है वहां पर जनरेटर लगायें जाएं उनसे बिजली भी तैयार हो सकती है ओर उसमें लागत भी कम आएगी।

मैं दुबारा सरकार से प्रार्थना करता हूं कि वहां पर सर्वे करा के छोटे छोटे बिजली के स्टे ान लगायें जाए ताकि लोगो को बिजली मिल सके।

चौधरी चांद राम (बबैन अनुसूचित जाति): स्पीकर साहब, मैं ज्यादा समय नही लूंगा। इसमें दो रायें हो ही नही सकती कि यह सारा सदन हरियाणा सरकार से यह सिफारि ा करें, यह प्रार्थना करे कि हमारे इस रीजन में, इस स्टेट में परमाणु केन्द्र स्थपित करने के लिए भारत सरकार को राजी करें। यहां पर अभी अभी बताया गया है कि एटोमिक स्टे ान की क्यों जरुरत है? इसके बारे में तो कोई दलील देने की जरुरत नही है क्योंकि यह अणु भाक्ति जो है इस भाक्ति का मुकाबला बिजली या कोई दूसरी भाक्ति कर ही नही सकती। यह एक ऐसी भाक्ति है जिसके जरियें हमारी कई प्रकार की विकास योजनाएं चालू हो सकती है। एक बात मैं खास तौर पर कहना चाहता हूं। पिछले 7–8 साल से, और उससे पहले जब पंजाब और हरियाणा इकट्ठा था यानि जब पंजाब और हरियाणा का पुनगर्ठन हुआ उसके बाद भी न हरियाणा में और न पंजाब में ऐसी कोई योजना आई है। इस आधार पर हम यही कह सकते है कि हमारे इस रीजन के साथ सौतेली मां जैसा सलुक हो रहा है। हमारा रीजन ऐसी है कि जहां पर ज्यादा पैदावार हो सकती है, जहां पर क्षमता ज्यादा है, सामर्थ्य ज्यादा है, वहां पर उसको ऐक्सपलायड नही किया जाता। हम महंगाई को

रोक ही नही सकते जब तक कि मुल्क में पैदावार ज्यादा नही होती। मुल्क में पैदावार ज्यादा केवल एक ही तरीके से हो सकती है और वह है जहां पर क्षमता ज्यादा है वहां पर उसे ऐक्सप्लायट किया जाए। हमारा दे ा कृशि प्रधान दे ा है। कृशि से ही सारी चीजे उत्पन्न होती है। जो इंडस्ट्रीज है, वे भी खेती की चीजो पर निर्भर करती है खेती से सिर्फ अन्न ही पैदा नही होता बल्कि जो दस्तकरियां हैं, उनका रा–मैटीरियल यानी कच्चा माल भी पैदा होता है। कच्चा माल ज्यादा पैदा करने के लिए और अन्न ज्यादा पैदा करने के लिए यह जरुरी है कि इन्टैन्सिव कल्टीवे ान की जाये और उसके लिए टयूबवैल्स को पूरी भाक्ति दी जाए या किसी दूसरे तरीके से उद्योगों को अटौमिक भाक्ति से चलाया जाए। ऐसा करना निहायत लाजमी है। हरियाणा–पंजाब का रीजन ऐसी है कि इन दोनो ने यह साबित कर दिया है कि हम बहुत कुछ पैदावार बढा सकते हैं। अभी आप देखें। हमारा जो खेती का एरिया है, उसमें मु कल से 30 प्रति त के आस पास ऐरिये में सिंचाई होती है। इतना कुछ होने के बावजूद भी हरियाणा ने यह साबित कर दिया कि हम दे ा में दूसरों के मुकाबले बहुत आगे हैं। और पंजाब के बाद दूसरे नम्बर पर हैं। हालांकि हमारा एरिया पंजाब से छोटा है लेकिन हम फिर भी दूसरो से ज्यादा अनाज दे सकते है। अगर यहां पर भाक्ति ज्यादा दी जाए बिजली ज्यादा दी जाए, तो यह कुदरती बात है कि खेती के लिए ज्यादा पानी उपलब्ध होगा, और सिंचाई बढ जाएगी। हम रोज उपदे ा देते है कि खेती की पैदावार ज्यादा करो। अगर किसी दे ा ने जिवित रहना है, किसी दूसरे दे ा के भिखारी नही बने रहना चाहते, तो यह लाजमी है कि वह पैदावार बढाए। हम आजाद होने के बाद 20–22 साल में 5500 करोड का

अनाज बाहर से मंगवा चुके हैं। आप दूसरे सूबो की तरफ नजर डालें। वे सब डैफिसिट में हैं। हरियाणा की तरफ नजर डालें, पंजाबी की तरफ नजर डालें, हम वाकई सरप्लस हैं। हम अपनी जरुरत भी पूरी करते है और दे ा को भी खिलाते है। इस बात में कोई दो राय नही हो सकती कि अगर इन दोनो प्रदे ाो को ज्यादा बिजली दी जाये जिससे कि सिंचाई ज्यादा हो सके तो हम अनाज का भण्डार करते है। उनमें दोनो सूबे ज्यादा अनाज दे सकते हैं। इस बात मे कोई दो राय नही है कि अगर यहां पर एक एटौमिक स्टे ान दे दिया जाए तो यह लाज्मी बात है कि उसका सदुपयोग होगा। यहां की जनता ने, यहां के किसान ने, यहां के उद्ययोगपतियों ने यह साबित कर दिया है– चाहे फरीदाबाद हो, चाहे बटाला हो, चाहे जालंधर हो, चाहे लुधियाना हो, चाहे सोनीपत हो, कि हम मुल्क में दूसरे सूबो से ज्यादा आगे बढ सकते हैं चाहे वह उद्योग हो या खेती बाडी हो। आज यह जरुरी है कि गरीबी हटाई जाए और पैदावार ज्यादा की जाए। पैदावार ज्यादा वही कर सकता है जिसकी करने की क्षमता हो। जिसकी क्षमता है, उसको पूरे साधन नही दिये जाते। दे ा में यह आवाज उठी है कि इन सूबो में खु ाहाली है इसलिए यहां पर नेक्लाईट मुवमैंट नही पनप सकी। कई लोगो को यहा कि पंजाब और हरियाणा की खु ाहाली भी अखरती है। वैसे तो हर प्रांत यह चाहेगा कि उसके यहां एटौमिक स्टे ान लगे लेकिन जैसा कि चौधरी राम लाल जी ने कहा कि हमारे चीफ मिनिस्टर जो योजना भेजते है वह मंजूर हो जाती है।इसलिए यह भी हमारे चीफ मिनिस्टर का एक टैस्ट होगा। मैं उम्मीद करता हूं कि जो चीफ मिनिस्टर दबाने में, ऐजीटें ान दबाने में और जैसा कि उन्होने कहा कि मैंने यह कर दिया, वह कर दिया, मैं सर नही उठाने

दूंगा तो यह भी उनका एक टैस्ट होगा। एक कंस्ट्रक्टिव टैस्ट होगा, एक रचनात्मक टैस्ट होगा। दो तरीके से तरक्की होती है एक तो हमारे पास बिजली की कोई ज्यादा पैदावार नही है सिर्फ फरीदाबाद में थर्मल प्लांट है, पानीपत में अब लगने जा रहा है। यमुनानगर का पता नही क्या हुआ। इसी तरह पानी की हालत है। यमुना पर अभी तक डैम नही बनाया। मैं समझता हूं कि आठ साल या छः साल में जमुना पर जो डैम चौधरी छोटूराम के जमाने से कागजो पर चलता आ रहा है अब तक हम भारत सरकार को नही मना पाए कि यह डैम बनना जरुरी है और तो तरक्की करने का कोई तरीका नही है या थर्मल प्लांट्स या जमुना पर डैम। परमाणु भाक्ति घर अगर लग जाए तो मै समझता हूं कि यह एक आधार बन जाएगा खु ाहाली का और हरियाणा दे ा को एक मार्ग दिखा सकेगा। जो लोग कहते थे कि हरियाणा जो है वह अपने पैरों पर खडा नही हो सकेगा। यह छः सात जिलो का प्रान्त है यह क्या तरक्की करेगा। लेकिन इस प्रान्त ने यह साबित कर दिया कि दे ा समुद्धि में यह प्रान्त कितना फायदा कर सकता है। इन भाब्दो के साथ मैं उम्मीद करता हूं कि पूरजोर के साथ सरकार इस काम में यत्न करेगी।

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री(श्री बनारसी दास गुप्त):स्पीकर साहब, समय तो थोडा है सिर्फ पांच छः मिनट बाकी है।

श्री अध्यक्षः आप भाुरु करें अगर टाईम कम होगा तो अगले दिन कन्टीन्यू होगा।

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई सन्देह नही कि बिजली बहुत बडी भाक्ति है और किसी भी प्रदे ा की, किसी

भी दे ा की खु ाहाली और उसका विकास बिजली के उपर निर्भर करता है। इसमैं भी कोई सन्देह नही कि हरियाणा प्रदे ा एक कृशि प्रधान प्रदे ा है और यदि इसको पूरा पानी और बिजली मिल जाए तो तो दे ा के अन्न भंडार को भरने में यह बडा भारी सहयोग दे सकता है। अध्यक्ष महोदय, सब को पता हैकि जब हरियाणा प्रान्त अलग बना तो इस प्रदे ा के अन्दर एक लाख टन अनाज का घाटा था और वह बाहर से मंगाना पडता था। आज हर प्रकार का अनाज मिलाकर 15–16 लाख टन हम दूसरे सूबो को भेजते है। इसमें कोई सन्देह नही कि अगर आज हमको पूरी बिजली मिल जाए, पूरा पानी मिल जाए तो, हरियाणा प्रदे ा का किसान इतना मेहनती है कि वह बहुत ज्यादा उत्पादन कर सकता है। यहां का उद्योगपति और यहां का मजदूर जो बहुत मेहनती है, वे भी हरियाणा की उन्नती में बडा योगदान दे सकते है। अध्यक्ष महोदय, अभी हम एक मिटिंग कर रहे थे। अभी पैडी सोइंग का सीजन चल रहा है, पर ट्यूबवैल को पूरी बिजली नही मिल रही। अगर आप दस घंटे प्रतिदिन बिजली दे दें तो हम बहुत ज्यादा धान की जीरी लगवा सकते हैं और उत्पादन बढा सकते है। उस मिटिंग में दोनो जिलों के एम0 एल0 ए0 भी मौजूद थे। हमने इस पर विचार किया। हम चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा बिजली हम दें लेकिन हमारे हाथ बंधे हुए है। इसमें कोई सन्देह नही कि बिजली की भाक्ति हमारे पास बहुत कम है। आज जो विचार, जो भावनाएं मेरे साथियों ने व्यक्त की है वे बिल्कुल ठीक हैं। मैं मानता हूं कि आज अगर हमें पूरी बिजली मिल जाए तो हरियाणा प्रदे ा प्रगति के मार्ग में इतना आगे बढ सकता है कि भाायद कुछ दिनो में खु ाहाली के मामले में हिन्दुस्तान का एक नम्बर प्रदे ा हो जाए बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि

हर दृश्टी से हरियाणा प्रथम दर्जे का प्रदे ा हो सकता है। जहां तक परमाणु भाक्ति का प्र न है मैं दो चार मिनट मे बतलाना चाहता हूं कि हरियाणा सरकार ने कभी इस बात के लिए कसर नही रखी कि परमाणु भाक्ति घर हरियाणा में लगे। भारत सरकार को एप्रोच किया, आग्रह किया, उन पर दबाव डाला। भारत सरकार का जो एटौमिक ऐनर्जी डिपार्टेमैंट है उसकी एक साइट सिलैक ान कमेटी है। उस कमेटी के चेयरमैन 1970 में चंडीगढ आए और ताजे वाला के पा फैजपूर के इलाके में साइट सिलैक्ट किया और भारत सरकार का जो जियोलोजीकल डिपार्टमैंट है उसने भी उस साईट को एप्रूव कर दिया और भारत सरकार के उस विभाग ने हरियाणा रकारसे जो टैक्नीकल डैटा, और जो इन्फर्े ान मांगी वह तमाम हमने सप्लाई की और जिस प्रकार का सहयोग उन्होने मांगा वह सहयोग हमने उनको तुरन्त दिया। इसके अलावा जिला गुडगांव में कोटला लेक के स्थान पर एक जगह और सिलैक्ट की गई और जियोलोजिकल डिपार्टमैंट ने उसकी भी एप्रूवैल दे दी यह हमारा दुर्भाग्य है कि जब उसका फैसला होने लगा तो अक्तूबर 1972 मे डिसीजन लिया गया कि यह परमाणु भाक्ति घर पि चमी उत्तर प्रदे ा के नरौरा के स्थान पर लगाया जाये। मैं सदन को आपके द्वारा वि वास दिलाना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में हरियाणा सरकार या बिजली बोर्ड ने किसी प्रकार की कोई कसर दबाव डालने में, आग्रह करने में उठा नही रखी। जो कुछ सहयोग उन्होने मांगा वह उनको दिया गया।

स्पीकर साहब, अब स्थिती इस वक्त यह है कि तमाम हिन्दुस्तान के अन्दर चार परमाणु भाक्ति घर है– एक तारापुर में बम्बई के पास, एक राणा प्रताप सागर राजस्थान में, एक कालापुर मद्रास में

और चौथा नारौरा यू0 पी0 में जो अण्डर कंस्ट्रक ान है। लेकिन भारत सरकार ने यह नि चय किया है कि एक और परमाणु भाक्ति घर उतरी क्षेत्र(नार्दन जोन) में लगाया जाए। इसके लिए हम पूरी भाक्ति के साथ लगे हुए हैं। पंजाब क्षेत्र भी इस बात के लिए पूरी कोि ा ा कर रहा है लेकिन मुझे आ ाा कि एक किरण दिखाई देती है। भारत सरकार के परमाणु भाक्ति विभाग ने यह कहा है कि जो–जो टैक्नीकल इंफरमै ान हरियाणा ने सप्लाई की थी उससे हम सैटिस्फाइड है और हमने रिकार्ड पर यह तमाम चीजें रख ली हैं। जिस वक्त पांचवे परमाणु भाक्ति घर के लगाने का फैसला होगा तो हरियाणा का वि ोश ध्यान रखा जाएगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा सदन को और इस प्रस्ताव के प्रस्तावको को वि वास दिलाना चाहता हूं कि सरकार की तरफ से इसमें कोई कसर बाकी नही रहेगी। हरियाणा के लिए इससे अधिक खु ाी की बात और क्या हो सकती है कि बिजली जैसी भाक्ति का हमें केन्द्र मिल जाए। अब तो हिन्दुस्तान इस पोजी ान में है कि वह परमाणु ताप घर अधिक संख्या में लगा सके। अभी पिछले दिनों एक परमाणु विस्फोट भी भारत में हुआ है। जिससे हमारे पडोसी दे ा भयभीत भी हो गया लेकिन हमारी प्रधान मंत्री ने वि वास दिलाया है कि यह भाक्ति जो हमने अर्जित की है उस का प्रयोग दे ा के विकास के लिए, दे ा की उन्नति के लिए किया जाएगा। किसी पडोसी दे ा के विरुद्ध युद्ध में प्रयोग नही किया जाएगा।

Mr. Speaker: The House stands adjourned till 9:30 A.M. tomorrow.

13.00 बजे

(The sabha then adjourned till 9:30 A.M on Friday, the 12th July, 1974.)

अनुबन्ध–क

कृपया पृश्ठ (4)12 पर पद टिप्पणी देखिए

Total number of class I, II, III & IV Government Employees in the State

***802. Ch. Dal Singh:** Will the Minister for Social Welfare and Taxation be pleased to state:-

(a) the total number of Class I, II, III & IV Government Employees in the State as on 31.3.1974; and

(b) the total of Class I, II, III & IV Government Employees out of those referred to in part(a) above, who belong to Scheduled Castes and Backward Classes, separately?

समाज कल्याण एवं कराधान मंत्री (श्री भयाम चन्द):

(क)	क्लास–I	क्लास–II	क्लास–III	क्लास–IV
	891	3230	100655	25373

(ख)

अनुसूचित जातियां				पिछड़े वर्ग कल्याण			
क्लास –I	क्लास –II	क्लास– III	क्लास– IV	क्लास –I	क्लास –II	क्लास– III	क्लास– IV
87	82	8457	6557	2	27	4585	2591